Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

भिक्षु वाणी
एक नर पंडित प्रवीण,
एकण ने अखर ना चढ़े।
एक आदमी पण्डित और प्रवीण है। एक ऐसा है जो अक्षर भी याद नहीं कर पाता।
–आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 45 • 10 अगस्त - 16 अगस्त 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 08-08-2026 • पेज 20 ₹ 10 रुपये

आध्यात्मिक क्षितिज पर स्वर्णिम आलोक : वर्धापना के पावन अवसर पर युवाचार्यप्रवर के चरणों में अभिवंदना

नीला गगन, उफनती लहरें, और गूंज उठा यह पावन मान
महाश्रमण की दिव्य छाँव में महावीर मुनि ने पाया वरदान!
'सुमनों का ही ताज रहे' यह गूंज उठा महा-संकल्प
भिक्षु-शासन की पावन सेवा का जागेगा नव-विकल्प!

श्रद्धाप्रणत अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 अगस्त - 16 अगस्त 2026

तेरापंथ स्थापना दिवस पर 'कब तक चलेगा तेरापंथ?' विषय पर पावन देशना

एक गुरु, एक अनुशासन–तेरापंथ की अमरता का महामंत्र! : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य भिक्षु संघ के जनक हैं; एक आचार्य का नेतृत्व और त्याग-संयम ही तेरापंथ की असली ताकत

लाडनूं।
29 जुलाई, 2026

तीर्थंकर महावीर के प्रतिनिधि, धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'तेरापंथ स्थापना दिवस' के पावन अवसर पर 'कब तक चलेगा तेरापंथ?' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को ओजस्वी पावन पाथेय प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि आचार्य भिक्षु और तेरापंथ एक-दूसरे के पर्याय हैं। भिक्षु स्वामी तेरापंथ के आद्य प्रणेता, प्रवर्तक व प्रथम आचार्य हैं और वे ही इस संघ के जनक हैं। आचार्य भिक्षु के जन्म के पूर्व उनकी माता द्वारा देखे गए 'सिंह' के सपने का उल्लेख किया गया है। आचार्य भिक्षु जैसा तेजस्वी, पराक्रमी और ज्ञानी व्यक्तित्व, जिसने धर्म संघ को नई दिशा दी, उनके लिए माता को सिंह का सपना आना कोई असंभव या आश्चर्यजनक बात नहीं है। यह उनके असाधारण व्यक्तित्व का प्रतीक है।

> सिद्धान्तों से समझौता न करना ही... किसी संघ की सबसे बड़ी ताक़त होती है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ को जानने के ३ मुख्य आयामः

१.तेरापंथ का इतिहासः पूज्य आचार्यश्री ने कहा कि संघ के गौरवशाली इतिहास को जानने के लिए आचार्य तुलसीकृत 'तेरापंथ प्रबोध', आचार्य महाप्रज्ञ जी की कृतियां, मुनिश्री बुद्धमल जी की 'तेरापंथ का इतिहास' तथा मुनिश्री नवरत्नमल जी रचित 'शासन समुद्र' बेजोड़ ग्रंथ हैं।

२. सिद्धांत और दर्शन : संघ के सिद्धांतों को समझने के लिए 'अनुकंपा की चौपाई' व 'भ्रमविध्वंसनम' जैसे महान ग्रंथ हैं। अभातेममं द्वारा संचालित पाठ्यक्रम इसका सुंदर माध्यम है।

३. मर्यादा और व्यवस्था : तेरापंथ का सबसे अनूठा आयाम है—'एक ही आचार्य के अनुशासन में चलना'। कब तक अक्षुण्ण रहेगा तेरापंथ? पूज्य प्रवर ने मर्मस्पर्शी उद्बोधन में कहा कि जब तक हमारी चारित्रात्माएं विशुद्ध चारित्र का पालन करेंगी, स्थानों व मठों की आसक्ति में नहीं फंसेंगी और वस्त्र-उपकरणों की मर्यादाओं के प्रति निष्ठा बनी रहेगी, तब तक तेरापंथ धर्मसंघ इसी प्रकार निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहेगा।

युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखा जी व साध्वीवर्या जी के ओजस्वी वक्तव्य :

१.युवाचार्यश्री महावीरकुमार जीः युवाचार्यश्री ने कहा कि आज का दिन तेरापंथ इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है। इसी दिन आचार्यश्री भिक्षु ने नव्य-भव्य दीक्षा स्वीकार की थी। अकंप संकल्प के धनी आचार्य भिक्षु के रूप में हमें ऐसे गुरु मिले, जिनके एकछत्र नेतृत्व में संघ निरंतर विकास कर रहा है।

२.साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा जीः साध्वी प्रमुखा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने सुविधा का मार्ग छोड़कर सत्य का कठिन मार्ग चुना और एक नए इतिहास का सृजन किया। तमाम कष्टों और कठिनाइयों के बावजूद स्वामी भिक्षु न कभी थके, न कभी रुके; वे अपने सिद्धांतों पर अडिग रहकर आगे बढ़ते रहे।

साध्वीवर्या संबुद्धयशा जीः साध्वीवर्या जी ने कहा कि तेरापंथ संघ की नींव अत्यंत सुदृढ़ है क्योंकि इसकी स्थापना एक 'आग्नेय पुरुष' द्वारा की गई है। स्वामी भिक्षु दृढ संकल्पी, साहसी और सम्यक पराक्रमी व्यक्तित्व के धनी थे।

संघ गान व विशेष भक्ति उपक्रम

सामूहिक संघ गानः मुनिवृंद, साध्वीवृंद एवं समणवृंद ने सुमधुर गीतों का संगान किया।

2000 वर्षों तक तेरापंथ का...

पूज्य प्रवर ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ का एक प्रसंग साझा किया गया है, जिसमें उन्होंने मुनि अवस्था में यह घोषणा की थी कि ज्योतिष के अनुसार आगामी 2000 वर्षों तक तेरापंथ धर्म संघ का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। इसे संघ की मजबूत नींव और आचार्य भिक्षु के संकल्प से जोड़कर बताया गया है।

त्रिलोक विजेता की सबसे बड़ी भूल......

साध्वी प्रमुखा श्री ने कहा कि रावण के मन में एक अभिलाषा थी कि मैं आकाश में सीढ़ियां लगाऊं। दूसरी उसकी इच्छा थी कि मैं समुद्र को समुद्र का जो खारा पानी है उसको मीठा बनाऊं। और तीसरी उसकी इच्छा थी कि मैं स्वर्ग को धरती पर लाऊं। किंतु वह अपनी तीनों ही इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सका। यद्यपि रावण बहुत विद्याओं का ज्ञाता था। कहा जाता है उसके अनेक देवियां वशवर्ती थी। फिर भी उसका संकल्प फलवान नहीं बना। और उसका कारण था कि उसके कोई गुरु नहीं था।

बेटियां जहां जाएं, संस्कारों से घर को स्वर्ग बना दें : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती परिसर में 1600 से अधिक बेटियों, दामादों व बच्चों के पहुंचने से छाया आध्यात्मिक आनंद

लाडनूं।
01 अगस्त, 2026

'संसार भ्रमणः मोक्ष वरण':

आगम के माध्यम से पावन देशना प्रदान करते हुए नेमानंदन, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने गीली व सूखी मिट्टी के गोले का उदाहरण देकर आसक्ति और अनासक्ति का अंतर समझाया।

१.भोग और त्याग का विवेकः भोगों में उपलेप (लेप) होता है और जो अभोगी (अनासक्त) होता है, वह उपलिप्त नहीं होता। जहां आसक्ति और भोग है, वहां संसार भ्रमण है; जहां त्याग और अनासक्ति है, वहां मोक्ष का लक्ष्य है।

२.मिट्टी के गोलों का दृष्टांतः जिस प्रकार गीली मिट्टी का गोला दीवार पर

चिपक जाता है, उसी प्रकार दुर्बुद्धि लोग विषयों से चिपक जाते हैं। विरक्त व्यक्ति सूखी मिट्टी के गोले की तरह पदार्थों का उपयोग करके भी उससे चिपकता नहीं है।

३.साधु और सामान्य जन में अंतरः साधु और गृहस्थ दोनों पदार्थों का उपयोग करते हैं, लेकिन साधु अनासक्ति

> पद और पैसे से कई गुना श्रेष्ठ है धर्म की संपत्ति पाना
> –आचार्यश्री महाश्रमण

भाव से उपयोग करता है। आसक्ति का त्याग करने से साधना और अध्यात्म में उच्चता आती है।

४.सुविधावाद से बचने की प्रेरणाः जीवन में सादगी और संयम का बहुत महत्त्व है। शरीर के लिए केवल आवश्यकता भर का उपयोग हो, भोग-विलास के लिए नहीं। बाहरी चीजों से जितना अनाकर्षण रहेगा, अध्यात्म और साधना का विकास उतना ही अधिक होगा।

महल में फ़कीर, दिमाग में महल

एक बार राजा के निमंत्रण पर एक संत राजमहल में ठहरे। राजा को लगा संत दो-चार दिनों में चले जाएँगे, लेकिन हफ़्ता बीतने पर भी जब संत ने जाने का नाम नहीं लिया, तो राजा अधीर हो उठा। राजा ने संत से शिष्टतापूर्वक पूछा, 'महाराज, अब आगे का क्या विचार है?' संत मुस्कुराकर बोले, 'फ़कीर का कोई तय ठिकाना नहीं होता।'

यह सुनकर राजा बोला, 'महाराज! आप स्वयं को फ़कीर कहते हैं, लेकिन आप भी उसी महल में सो रहे हैं और वही सुख-सुविधाएँ भोग रहे हैं जो एक राजा के रूप में मैं भोगता हूँ। फिर आपमें और मुझमें अंतर ही क्या रहा?'

संत बोले, 'तुम्हारे प्रश्न का उत्तर आगे चलकर दूँगा।'

दोनों नगर से बाहर की ओर चलने लगे। दो-ढाई किलोमीटर दूर पहुँचने पर राजा ने रुककर फिर उत्तर माँगा। संत ने कहा, 'थोड़ा और आगे चलो।'

तब राजा व्याकुल होकर बोला, 'महाराज! मेरा राज-काज, महल और परिवार पीछे छूट रहा है, मुझे तो लौटना ही पड़ेगा।'

संत ने राजा का हाथ थामकर कहा, 'राजन! यही तुम्हारा उत्तर है। तुम शरीर से यहाँ आ गए, लेकिन तुम्हारा मन अब भी महल और सत्ता में अटका है। मैं महल में रहकर भी महल से मुक्त था, और तुम जंगल में आकर भी महल को मन में ढो रहे हो।'

सारः असली फ़कीरी या अनासक्ति सुविधाओं के अभाव में नहीं, बल्कि मन के अलिप्त भाव में है। आवश्यकताएँ शरीर की होती हैं, पर आसक्ति मन की।

'इटरनल फुट प्रिंट्स' का विमोचनः

जैन विश्व भारती द्वारा मुनि अनेकांतकुमार जी व साध्वी धैर्यप्रभा जी की संयुक्त जीवनी पर आधारित अंग्रेजी पुस्तक 'इटरनल फुट प्रिंट्स' का आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पण किया गया। इस पुस्तक को मुनि कौशलकुमार जी और साध्वी सिद्धार्थप्रभा जी ने संयुक्त रूप से लिखा है।

(शेष पेज 16 पर)

गुरुवर त्रिभुवन तिलक, परम तितिक्षावान
युवाचार्य को प्रकट कर, दिया संघ वरदान ।

: श्रद्धाप्रणत :

खेमचंद-ललितादेवी

विदित-प्रीति

समकित-गीतिका

संवृति, जेनिका मुकीम

श्रीमति GEMS & JEWELS
New Delhi

Vidit Jain & Co.
New Delhi

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
10 अगस्त - 16 अगस्त 2026

पारखी नजरें ज्योतिचरण की ढूंढ़ निकाला कोहिनूर,
संघ भाल पर युगों युगों, आलेख लिखे नूतन भरपूर।
युवराजा के राजतिलक से, निश्चिंत बने शिरमोर॥

: श्रद्धाप्रणत :

SHARAT REALTY BUILDING RELATIONS | DREAM CONSTRUCTIONS

देवीलाल श्रीश्रीमाल (नरदास का गुड़ा - ठाणे) • संदीप कोठारी (रिंछेड़ - चेम्बूर, मुंबई)

रिंकू बाफना (आमेट - चेम्बूर, मुंबई) • गौतम कोठारी (टाडगड़ - वाशी नवीमुंबई)

बोधि दिवस पर लाडनूं की माटी ने नव-इतिहास रचाया,
तुलसी-महाप्रज्ञ-महाश्रमण की करुणा का वरदान है पाया॥
मुख्यमुनि के विनय-समर्पण से चमका संघ का ध्रुव-तारा,
दूगड़ परिवार नमन करे, गूंजे आचार्य-युवाचार्य का जयकारा॥

: श्रद्धाप्रणत :

'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' स्व. हनुमानमलजी दूगड़ 'जौहरी' एवं
'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' गिन्नीदेवी की पावन स्मृति में
मदनचंद-सरोज, आलोक-उषा, अजित-वंदना
अयांश एवं संपूर्ण दूगड़ परिवार
सरदारशहर-मुम्बई-सूरत
ROYAL DIAM (MUMBAI-SURAT)

प्रश्नकर्ता बनो! जिज्ञासा से ही जाग्रत होती है चेतना : आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के मंत्र दीक्षा कार्यक्रम में आचार्यश्री ने दी बालकों को प्रेरणा

लाडनूं।
02 अगस्त, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में विभिन्न धार्मिक व आध्यात्मिक आयोजनों का गरिमामय क्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्य प्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ।

'जानें षड्द्रव्य को': आगम के माध्यम से पावन देशना :

१. जिज्ञासा से ज्ञान की स्फुरणा : आदमी के मन में उचित प्रश्न उठना चेतना की जागृति का प्रतीक है। प्रश्नकर्ता और जिज्ञासा करने वाला व्यक्ति अनेक जानकारियों से युक्त बनता है।

२. लोक की परिभाषा : जहाँ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश, काल, पुद्‌गल और जीव—ये ६ द्रव्य उपलब्ध होते हैं, वही लोक है।

३. अनंत आकाश और लोक : सबसे व्यापक तत्व 'आकाश' अनंत है। इस अनंत आकाश का एक छोटा सा हिस्सा 'लोक' है, जिसके बाहर का आकाश शून्य समान है।

४. लोक में जीव स्थिति : समस्त

प्राणी, अनंत सिद्ध व अरिहंत भगवान, चारित्रात्माएं इसी लोक में विराजमान हैं। नरक और निगोद भी इसी लोक में स्थित हैं।

द्रव्यों का दो वर्गों में विभाजनः

१. प्रथम वर्ग : धर्म, अधर्म और आकाश (ये तीनों एक-एक द्रव्य तथा असंख्य व समान प्रदेशात्मक हैं)।

२. द्वितीय वर्ग : काल, पुद्‌गल और जीवास्तिकाय (ये तीनों अनंत द्रव्यों वाले हैं)।

द्रव्य और गुण का संबंधः

द्रव्य गुणों और पर्यायों का आश्रय है। सभी द्रव्यों के सामान्य व विशेष गुण केवल द्रव्यों में ही स्थित होते हैं।

उत्तरज्झयणाणि आगम का महत्वः इस महान आगम में तत्वज्ञान, आध्यात्मिक संदेश, कथानक और घटना प्रसंग समाहित हैं। चारित्रात्माओं को इसका निरंतर स्वाध्याय करते रहना चाहिए।

तपस्या प्रत्याख्यान, पुस्तक लोकार्पणः

१. ४३ की तपस्या की पूर्णताः मुनि नमिकुमारजी ने पूज्य आचार्यश्री के समक्ष उपस्थित होकर ४३ की तपस्या की पूर्णता का प्रत्याख्यान किया।

२. 'फायर इन द सेंट' पुस्तक लोकार्पण : साध्वी तेजस्वीप्रभाजी की कृति 'फायर इन द सेंट' (Fire in the Saint) पुस्तक को जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों द्वारा आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित किया गया। साध्वी जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी, जिस पर पूज्य प्रवर ने

> प्रमाद छोड़ो, धर्म से जुड़ो... जीवन में जहां रहो, धर्मोद्योत करते रहो!
> –आचार्यश्री महाश्रमण

मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

३.'बेटी तेरापंथ की' सम्मेलन का समापन एवं युवाचार्यश्री का उद्बोधनः 'बेटी तेरापंथ की' के चतुर्थ सम्मेलन के दूसरे व अंतिम दिन नवनियुक्त युवाचार्यश्री महावीरकुमारजी ने उपस्थित संभागियों को सम्बोधित किया— 'यह महासभा का ऐसा प्रकल्प लग रहा है, मानो बेटियां सद्भावना का पुल बना रही हैं। यह कार्यक्रम दो किनारों को जोड़ने और सद्भावना को प्रसारित करने का सशक्त माध्यम बना है। हमारा जीवन प्रमाद मुक्त हो तथा स्वयं को धर्म से जोड़कर रखने का निरंतर प्रयास होना चाहिए।'

आचार्यश्री की प्रेरणाः पूज्य प्रवर ने प्रेरणा दी कि जीवन में अहिंसा, संयम और तप के प्रति आकर्षण रहे। मनुष्य जीवन में जितना धर्म कर सकें, करें और जहाँ भी रहें, अच्छा धर्मोद्योत करते रहें।

मित्रता दिवस पर पूज्य प्रवर का संदेश

1. आत्मा से मित्रताः आचार्य श्री ने फरमाया कि बाहरी दुनिया में मित्रता करने से पहले हमें अपनी आत्मा के साथ मित्रता (Friendship with our own soul) करनी चाहिए। पूज्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि औरों से मित्रता करें या न करें, लेकिन अपनी आत्मा के साथ मित्रता बहुत आवश्यक है।

2.कल्याणकारी मित्रः उन्होंने कहा कि यदि किसी से मित्रता करनी ही है, तो वह 'कल्याण मित्र' होना चाहिए, जो जीवन में सही दिशा दिखाए और आत्म-कल्याण में सहयोग दे सके।

3.आगम का सूत्रः उन्होंने आगम का एक महत्वपूर्ण सूत्र उद्धृत किया— आत्मा ही मित्र है और आत्मा ही अमित्र है। इसका अर्थ है कि हम स्वयं अपनी आत्मा को मित्र बनाने का प्रयास करें, जो हमारे लिए सबसे श्रेष्ठ कार्य है।

४.अभातेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा एवं श्रावक अभिव्यक्ति ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षाः अभातेयुप द्वारा आयोजित मंत्र दीक्षा कार्यक्रम में लाडनूं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को आचार्यश्री ने पावन मंत्र दीक्षा प्रदान की एवं मंगल प्रेरणाएं दीं।

क्रोध-मान त्यागें, खमत-खामणा से निर्मल होगी आत्मा : आचार्यश्री महाश्रमण

'बिन सम्यक्त्व के चारित्र कहां?' विषय पर गूंजी अमृत वाणी; ५५ की तपस्या पर मुनि पारसकुमार जी को मिला मंगल आशीर्वाद

लाडनूं।
03 अगस्त, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, परम धैर्यवान, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत चतुर्विध धर्मसंघ को पावन देशना प्रदान कर कृतार्थ कर रहे हैं। प्रातःकालीन मुख्य प्रवचन में पूज्य प्रवर ने 'बिन सम्यक्त्व के चारित्र कहाँ?' विषय पर आगम के आलोक में गहन दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

१.'बिन सम्यक्त्व के चारित्र कहाँ?': आगम के माध्यम से पावन देशना सम्यक्त्व और चारित्र के २ नियम–

पहला नियमः सम्यक्त्व विहीन चारित्र नहीं हो सकता। जिस प्रकार शरीर का मूल तत्व 'आत्मा' है, उसी प्रकार चारित्र का मूल आधार 'सम्यक्त्व' (सत्य पर सम्यक श्रद्धा) ही है।

> सम्यक्त्व वह इक्का है, जिसके आगे संयम के शून्य लगते ही आत्मा का मूल्य अनंत गुना बढ़ जाता है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

दूसरा नियम : सम्यक दर्शन है तो चारित्र हो ही, ऐसा अनिवार्य नहीं है। सम्यक्त्व की अवस्था में चारित्र हो भी सकता है और नहीं भी।

सम्यक्त्व-चारित्र की चतुर्भंगीः

१.सम्यक्त्व है, चारित्र नहीं।

२.चारित्र है, सम्यक्त्व नहीं (जैसे कोई अभवी जीव साधु संस्था में रहकर केवल ऊपरी आचार पाले, पर आत्मा से सम्यक्त्वी न हो)।

३. सम्यक्त्व भी है और चारित्र भी है।

४. सम्यक्त्व भी नहीं है और चारित्र

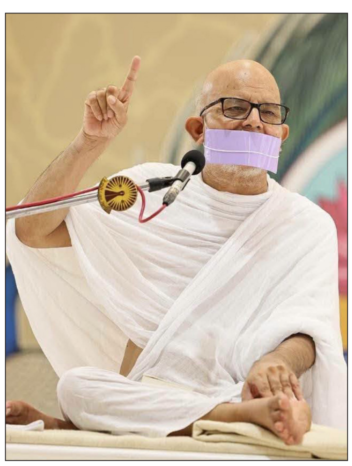

भी नहीं है।

एक साथ (युगपत्) सम्यक्त्व व चारित्र का जयाचार्यकृत न्यायः

१. आगम में दो विकल्प हैं— सम्यक्त्व और चारित्र एक साथ (युगपत्) भी आ सकते हैं या पहले सम्यक्त्व और बाद में चारित्र आ सकता है।

२. श्रीमद् जयाचार्य के न्याय का उदाहरण देते हुए आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि यदि छठे गुणस्थान वाले साधु के मन में संशय आने से पहला गुणस्थान आ जाए और अंतर्मुहूर्त में चेतना पुनः पुष्ट हो, तो सम्यक्त्व के साथ ही चारित्र भी एक साथ पुनः आ जाता है।

सम्यक्त्व का महत्त्व (इक्के का उदाहरण):

१. सम्यक्त्व और चारित्र दोनों मूल्यवान रत्न हैं, लेकिन सम्यक्त्व अधिक मूल्यवान है।

२.सम्यक्त्व के बिना चारित्र मृत शरीर के समान है। सम्यक्त्व वह 'इक्का' है जिसके आगे चारित्र रूपी शून्य लगाने से उसका मूल्य कई गुना बढ़ जाता है। सम्यक्त्व होने पर जीव को मोक्ष की प्राप्ति निश्चित है।

सम्यक्त्व की निर्मलता के उपायः

१. केवलि-प्रवेदित सत्य पर दृढ़ श्रद्धाः जो जिनों व केवलियों द्वारा प्रतिपादित है, वही परम सत्य और निःशंक है। मनुष्य को सत्य का समर्थन करना चाहिए।

२. कषायों की मंदता : क्रोध, मान, माया और लोभ को प्रतनु और मंद रखें।

३. खमत-खामणा (क्षमापना): मिथ्यात्व से बचने के लिए मन, वचन व काया से खमत-खामणा करें और किसी के प्रति बैर या कलुषता न रखें।

५५ की तपस्या की पूर्णता एवं प्रत्याख्यानः

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में मुनि पारसकुमार जी ने ५५ दिनों की कठिन तपस्या की लड़ी पूर्ण होने पर प्रत्याख्यान किया। आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

मुनि विशालकुमार जी और साध्वी सिद्धांतश्री जी ने आचार्यश्री के समक्ष आठ (अष्टम) की तपस्या का प्रत्याख्यान ग्रहण किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 अगस्त - 16 अगस्त 2026
हे प्रभो ! यह तेरापंथ

तेरापंथ समाज द्वारा अभातेयुप राष्ट्रीय पदाधिकारियों का सम्मान समारोह

दक्षिण मुंबई।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी, शासनश्री साध्वी मंजूरेखा जी एवं सहवर्ती साध्वी वृंद के पावन सान्निध्य में तेरापंथ समाज दक्षिण मुंबई द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ पटावरी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष विकास बोथरा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अभिनंदन नाहटा तथा मुंबई कार्यकारिणी सदस्य धीरज मेहता का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम का स्वागत उद्बोधन तेरापंथ युवक परिषद दक्षिण मुंबई के उपाध्यक्ष पुरण चपलोत ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के पंच मंडल सदस्य किशनलाल डागलिया, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष देवेंद्र डागलिया, तेरापंथ महिला मंडल दक्षिण मुंबई की

अध्यक्षा लतिका डागलिया तथा अणुव्रत समिति क्षेत्रीय संयोजक नरेन्द्र मुनोत ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन के माध्यम से अभातेयुप पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए दक्षिण मुंबई की सक्रिय संगठनात्मक यात्रा एवं सेवा कार्यों का उल्लेख किया। आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़ की विशेष उपस्थिति रहीं।

इसी अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद दक्षिण मुंबई द्वारा अभातेयुप

राष्ट्रीय पदाधिकारियों के चोखा सत्कार के निमित्त सात दिवसीय सेवा हेतु सहयोग प्रदान किया गया। अपने प्रेरक उद्बोधन में अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने शासनश्री साध्वीवृंद के प्रति अनंत-अनंत कृतज्ञता व्यक्त करते हुए बेंगलुरु चातुर्मास के दौरान उनके सान्निध्य में आयोजित अनेक प्रेरणादायी कार्यक्रमों का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि साध्वीवृंद का मार्गदर्शन युवाओं में नई ऊर्जा, सकारात्मक सोच एवं संगठन के प्रति समर्पण का भाव जागृत करता है। उन्होंने तेरापंथ युवक परिषद दक्षिण मुंबई की निरंतर सक्रिय एवं प्रभावशाली गतिविधियों की मुक्तकंठ से सराहना करते हुए आगामी समय में और अधिक ऊँचाइयों को प्राप्त करने के लिए सभी पदाधिकारियों एवं युवाओं को प्रेरित किया। अंत में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी एवं शासनश्री साध्वी मंजूरेखा जी ने अपने मंगलमय उद्बोधन में धर्म, संस्कार, सेवा एवं संगठन की भावना को जीवन में आत्मसात करने का संदेश देते हुए सभी पदाधिकारियों को शुभाशीष प्रदान किए। उन्होंने युवाशक्ति को समाज एवं संघ के उज्ज्वल भविष्य का आधार बताते हुए सतत सक्रिय रहने का आह्वान किया। कार्यक्रम का वातावरण आत्मीयता, संगठनात्मक एकता एवं सेवा-संकल्प से ओतप्रोत रहा। उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं समाजजनों ने इसे दक्षिण मुंबई एवं अभातेयुप के मध्य सुदृढ़ समन्वय, संवाद एवं संगठनात्मक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण अवसर बताया। तेरापंथ समाज दक्षिण मुंबई के पदाधिकारियों सहित श्रावकों की भी अच्छी उपस्थिति रहीं। कार्यक्रम का समापन मंगलभावों एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का सकुशल संचालन तेयुप दक्षिण मुंबई मंत्री श्रेयांस मुनोत एवं आभार ज्ञापन सहमंत्री मिखिल डागलिया ने किया। यह जानकारी तेयुप दक्षिण मुंबई उपाध्यक्ष दर्शन डागलिया ने दी।

SHINE FEST 2026 – Care, Connect, Contribute का मंगल उद्घाटन

उधना।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, उधना द्वारा जैन संस्कार विधि से, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, उधना द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय SHINE FEST 2026– Care, Connect, Contribute कार्यक्रम का भव्य एवं आध्यात्मिक शुभारंभ तेरापंथ भवन, उधना में संपन्न हुआ। शुभारंभ जैन संस्कार विधि के मंगलमय वातावरण में संपन्न कराया गया। संस्कारक अर्जुन मेडतवाल, नेमीचंद कावड़िया, अनिल सिंघवी एवं मनोजजी बाबेल ने अपनी सेवाएँ प्रदान करते हुए मंगलाचरण, मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण संस्कार विधि का सफल संचालन किया। इस अवसर पर मंगल भावना यंत्र की स्थापना तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष, मंत्री एवं समस्त पदाधिकारियों द्वारा श्रद्धापूर्वक की गई। आध्यात्मिक ऊर्जा एवं सकारात्मक संकल्पों के साथ SHINE FEST 2026 का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, उधना के अध्यक्ष हिमांशु चपलोत ने अपने स्वागत उद्बोधन में सभी अतिथियों एवं जैन संस्कार विधि की टीम के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इस प्रकार के संस्कारमय आयोजनों को समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादायी बताया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष नेमीचंद पोरवाल एवं तेरापंथ युवक परिषद, उधना के अध्यक्ष मनीष कावड़िया ने जैन संस्कार विधि के माध्यम से समाज में संस्कार, संस्कृति एवं आध्यात्मिक चेतना के प्रसार हेतु किए जा रहे कार्यों की मुक्तकंठ से सराहना की।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

सेलम।

साध्वीश्री संयमलताजी ठाणा ४ के सानिध्य में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष संपन्नता समारोह व तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का समायोजन हुआ। साध्वी संयमलताजी ने अपने उद्बोधन में आचार्य भिक्षु की आचार क्रांति, विचार क्रांति व अनुशासन क्रांति पर प्रकाश डाला। प्रथम चरण का संचालन साध्वी मार्दवश्री जी ने किया। द्वितीय चरण में 'तेरापंथ : मेरापंथ'कार्यशाला आयोजित हुई। प्रवीण बोहरा ने स्वागत भाषण व उपासक महेंद्र दक का परिचय भी दिया।

त्रिदिवसीय श्रीउत्सव 2026 उत्साहपूर्वक संपन्न

गंगाशहर।

तेरापंथ महिला मंडल, गंगाशहर द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में आयोजित त्रिदिवसीय 'श्री उत्सव 2026 – एक कदम स्वावलंबन की ओर' का सफल एवं भव्य आयोजन तेरापंथ भवन, गंगाशहर में संपन्न हुआ।

महिला उद्यमिता, आत्मनिर्भरता एवं सृजनशीलता को समर्पित इस आयोजन में तीनों दिन विविध कार्यशालाएँ, सांस्कृतिक एवं प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें बड़ी संख्या में आमजनों, विशेष रूप से महिलाओं एवं बच्चों ने सहभागिता निभाई। श्री उत्सव 2026* का शुभारंभ मुनि अमृत कुमार जी के मंगलपाठ और मुख्य अतिथि मांडवी राजवी (सेक्रेटरी, DLSA) एवं अभातेमम की कोषाध्यक्ष ममता रांका के द्वारा हुआ। अतिथियों ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने,अपने कौशल को पहचानने तथा उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

उद्घाटन के साथ ही प्रदर्शनी का शुभारंभ हुआ, जहाँ विभिन्न महिला उद्यमियों द्वारा आकर्षक स्टॉल लगाए गए। । श्री उत्सव प्रदर्शनी का अवलोकन करने पधारे हिमांशु (सीओ) और परमेश्वर सुथार (एस एच ओ) ने महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने वाले इस आयोजन की सराहना की। समापन दिवस पर गिफ्ट पैकिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें खुशी डागा ने प्रतिभागियों को आकर्षक एवं कलात्मक गिफ्ट पैकिंग की विभिन्न विधियों का प्रशिक्षण दिया अवलोकन करने। श्री उत्सव प्रदर्शनी का अवलोकन करने क्षेत्रीय विधायक जेठानंद व्यास भी पधारे और उन्होंने महिलाओं को संबोधित करते हुए सामाजिक समरसता एवं लव जिहाद जैसे विषय पर सजग रहने का संदेश दिया। संयोजक मीनाक्षी आंचलिया एवं भारती दफ्तरी, स्टॉल बुकिंग सहयोगी अनुपम सेठिया, कविता चोपड़ा, पिंकी चोपड़ा और समस्त कार्यकारिणी एवं कार्यकर्ताओं के सहयोग से यह तीन दिवसीय आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

श्री उत्सव-सक्षम नारी महिला सशक्तिकरण का आयोजन

वणी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल वणी ने आयोजित दो दिवसीय श्री उत्सव–सक्षम नारी महिला सशक्तिकरण,स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता का प्रेरणादायी उत्सव बनकर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य उद्घाटक संघमित्रा हिंगोले एवं प्रमुख अतिथि पल्लवी धुळधर की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा सरोज भंडारी ने स्वागत एवं प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'श्री उत्सव–सक्षम नारी' केवल एक प्रदर्शनी नहीं, बल्कि महिलाओं के आत्मविश्वास, स्वाभिमान और स्वावलंबन का उत्सव है।

अतिथियों का स्वागत भारतीय संस्कृति की गरिमामयी परंपरा के अनुरूप शब्द-सुमनों से किया गया। दो दिवसीय उत्सव में साड़ियों, रेडीमेड परिधानों,आकर्षक ज्वेलरी, होम डेकोरेशन सामग्री, हस्तनिर्मित वस्तुओं, घर पर निर्मित हर्बल हेयर ऑयल, प्राकृतिक साबुन, अमृतधारा, अगरबत्ती, घरेलू उपयोग की विभिन्न सामग्रियों, स्वादिष्ट व्यंजनों तथा अन्य आकर्षक उत्पादों के अनेक स्टॉल लगाए गए।

अणुव्रत समिति की बैठक आयोजित

चेन्नई।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रताप दुगड़ की अध्यक्षता में अणुव्रत समिति, चेन्नई की आवश्यक बैठक तेरापंथ भवन, साहूकारपेट में आयोजित हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत से हुआ। इसके पश्चात प्रताप दुगड़ ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन कराया, जिसे उपस्थित सदस्यों ने सामूहिक रूप से दोहराया।

समिति अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा मंत्री कुशल बांठिया ने समिति की गतिविधियों एवं प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

अपने उद्बोधन में प्रताप दुगड़ ने अणुविभा की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की तथा नैतिक मूल्यों के व्यापक प्रसार का आह्वान किया। इस अवसर पर अमृतवाणी अध्यक्ष ललित दुगड़, अणुविभा से गौतमचंद सेठिया, डॉ. कमलेश नाहर, संतोष सेठिया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष महेन्द्र माण्डोत, साहूकारपेट ट्रस्ट बोर्ड के प्रबंधन्यासी तनसुखलाल नाहर, तेयुप अध्यक्ष कोमल डागा तथा महासभा आंचलिक प्रभारी विमल चिप्पड़ सहित अणुव्रत समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे और अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष स्वरूपचंद दाँती ने किया तथा आभार उपाध्यक्ष डॉ. दिलीप धींग ने ज्ञापित किया।

दायित्व बोध कार्यशाला का हुआ भव्य आयोजन

उधना।

तेरापंथ भवन, उधना के पावन प्रांगण में तेरापंथ युवक परिषद उधना द्वारा सत्र 2026-2027 की नवगठित टीम हेतु 'दायित्व बोध कार्यशाला' का अत्यंत गरिमामय एवं प्रेरणादायी आयोजन संपन्न हुआ।

इस विशेष अवसर पर सहभागी संस्थाओं के रूप में तेरापंथ युवक परिषद पांडेसरा, भेस्तान एवं सचिन की सक्रिय एवं उत्साहपूर्ण उपस्थिति ने कार्यक्रम को और अधिक ऊर्जावान बना दिया।

कार्यक्रम की मंगलमयी शुरुआत युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी डॉ. परमयशा जी आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में हुई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के महामंत्री सौरभ पटावरी की अध्यक्षता में उन्होंने अपने ओजस्वी एवं सारगर्भित वक्तव्य के माध्यम से उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को 'दायित्व बोध' कराया। अपने उद्बोधन में उन्होंने संगठन की कार्यप्रणाली, अनुशासन एवं जैन समाज के प्रति युवाओं की जिम्मेदारियों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा कि 'पद केवल सम्मान नहीं, बल्कि सेवा का एक श्रेष्ठ अवसर है।

उन्होंने युवाओं को आपसी समन्वय, समर्पण एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी तथा परिषद की योजनाओं को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने हेतु व्यावहारिक मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

पूरे कार्यक्रम का कुशल, प्रभावी एवं सजीव मंच संचालन मंत्री कमलेश डांगी द्वारा अत्यंत उत्कृष्ट रूप से संपन्न किया गया, जिसने कार्यक्रम को एक विशेष ऊंचाई प्रदान की।

उधना शाखा प्रभारी कुलदीप कोठारी (उधना), अमित गन्ना (पांडेसरा) एवं उत्कर्ष खाब्या (भेस्तान) ने अपने प्रेरणादायी विचार व्यक्त करते हुए टीम का उत्साहवर्धन किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **उत्तर कोलकाता।** लाडनु निवासी उत्तर कोलकाता प्रवासी स्वर्गीय उम्मेद सिंह-सरला देवी बैद के पुत्र विनीत बैद के नव-निर्मित गृह में जैन संस्कार विधि के अनुसार गृह प्रवेश संस्कार संस्कारक बिनोद आंचलिया ने संस्कारक के रूप में विधिपूर्वक किया।

■ **गंगाशहर।** कोमल- अशोक महनोत के नूतन गृहप्रवेश का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा उपरांत 'जैन संस्कारक' पवन छाजेड़ और देवेन्द्र डागा ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार और गीतिकाओं के साथ सम्पन्न करवाया।

प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **लिलुआ।** सरदारशहर निवासी– रिषड़ा प्रवासी चिराग बैद (सुपुत्र- सुशील -पिंकी देवी बैद)के घुसड़ी स्थित प्रतिष्ठान का शुभारम्भ अनुष्ठान जैन संस्कार विधि से उपासक और संस्कारक अरुण नाहटा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द सम्पन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

■ **जयपुर।** ज्योति - मनोज बडोला के सुपुत्र, निहाल देवी- शंकरलाल बडोला के सुपौत्र का नामकरण संस्कार उनके आवास पर ही संस्कारक राजेन्द्र बांठिया, धी संस्कारक पवन जैन ने जैन संस्कार विधि से मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर सम्पूर्ण प्रक्रिया को सम्पन्न करवाया।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की साधना का अमूल्य अवसर

गुवाहाटी।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि श्री विकास कुमार जी (ठाणा-2) का तेरापंथ धर्मस्थल, गुवाहाटी में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश संपन्न हुआ। मुनि आनंद कुमार जी ने चातुर्मास वर्षावास स्थापना अनुष्ठान संपन्न कराया। तेरापंथी सभा गुवाहाटी के अध्यक्ष रितेश खटेड़, महिला मंडल की अध्यक्ष सुशीला मालू, युवक परिषद के अध्यक्ष रोहित सुराणा, TPF के अध्यक्ष पंकज भूरा आदि ने भावपूर्ण शब्दों के माध्यम से मुनिद्वय का अभिनंदन किया। अपने प्रेरणादायी मंगल उद्बोधन में मुनि आनंद कुमार 'कालू' ने कहा कि चातुर्मास केवल चार महीनों का ठहराव नहीं, बल्कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की साधना का अमूल्य अवसर है। यह आत्मनिरीक्षण, आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का श्रेष्ठ समय है। उन्होंने कहा कि मनुष्य का वास्तविक सुख बाहरी भौतिक साधनों में नहीं, बल्कि अपने अंतर्मन की शांति, संयम और साधना में निहित है। संतों का सान्निध्य जीवन को नई दिशा देता है और चातुर्मास के दौरान अधिकाधिक धर्म, स्वाध्याय, सामायिक, प्रेक्षाध्यान तथा सेवा-साधना से जुड़कर जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। मुनिश्री ने सभी तेरापंथी संस्थाओं से आह्वान किया कि वे चातुर्मास के दौरान धर्मप्रभावना, संस्कार निर्माण, युवा जागरण, अणुव्रत एवं सेवा कार्यों को और अधिक गति प्रदान करें ताकि समाज में सकारात्मक परिवर्तन का वातावरण निर्मित हो सके। मुनिश्री ने तपस्या की मुक्तकंठ से अनुमोदना करते हुए कहा कि तप आत्मबल को जागृत करने का सशक्त माध्यम है तथा ऐसे तपस्वियों से समाज को प्रेरणा मिलती है।

मुमुक्षु का मंगल भावना समारोह

राजराजेश्वरी नगर, बेंगलुरु।

मुमुक्षु कोमल भंसाली (चिरपटिया मारवाड़ जंक्शन) का मंगल भावना समारोह दतेरापंथ सभा भवन राजराजेश्वरी नगर में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि आकाश कुमार जी एवं मुनि हितेन्द्र कुमार जी के पावन सान्निध्य में आयोजित किया गया। सभा के अध्यक्ष कमलसिंह दुगड़ ने सभी का स्वागत करते हुए मुमुक्षु बहन के आध्यात्मिक जीवन के लिए मंगल कामनाएं प्रेषित की। मुनि हितेन्द्र कुमार जी ने कहा कि दीक्षार्थी बहन अपने जीवन को एक नया मोड़ दे रही है, उनके मंगल भविष्य के लिए यही कहना चाहते हैं कि सदैव गुरु इंगित के अनुसार कार्य करते हुए संघ की प्रभावना करें। मुनि आकाश कुमार जी ने कहा कि कहा जाता है दीक्षा लेना लोहे के चने चबाने के समान है। एक तरह से देखा जाए तो है भी और दूसरे पहलू से नहीं भी, यह आप पर स्वयं निर्भर करता है। मुनिश्री ने दीक्षार्थी बहन से कहा आपने जिस लक्ष्य को संजोकर यह कदम बढ़ाया है उसे समता की साधना करते हुए पूर्ण करने की ओर अग्रसर हों, आपका आध्यात्मिक जीवन मंगलकारी हो। दीक्षार्थी बहन कोमल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि एक समय ऐसा था जब मुझ में धार्मिक रूचि बिल्कुल भी नहीं थी किंतु मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी की प्रेरणा तथा दिशा बोध ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी और मैं संयम पथ पर चलने की ओर अग्रसर हो उठी। आज मैं स्वयं को गुरु चरणों में संघ के प्रति समर्पित करने जा रही हूं। इसके साथ ही मुमुक्षु बहन ने अपने जीवन के अनुभवों को भी साझा किया। तेरापंथ ट्रस्ट राजराजेश्वरी नगर के अध्यक्ष राकेश छाजेड़, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष सरल पटावरी तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजु बोथरा ने भी दीक्षार्थी बहन के प्रति अपनी मंगल भावनाएं व्यक्त की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 अगस्त - 16 अगस्त 2026

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

वर्धापन अवसर पर शत-शत अभिनन्दन

● मुनि कमलकुमार ●

मनोनयन कर गुरु ने - २
खोली गण तकदीर ॥ ध्रुप ॥

तात सवाई माता छगनी के जाये
कोचर कुल उजियारे, फैला सुयश समीर ॥१॥

महाप्रज्ञ मुख दीक्षा, जसवल में पाई
समिति गुप्ति में तत्पर, अच्छी बनी नजीर ॥ २॥

महाश्रमण गुरुवर की, महर हुई भारी
धर्म संघ को उपहृत , निर्मल तम तस्वीर ॥ ३ ॥

डाक्टर सरल नम्र हैं, आगम के ज्ञाता
श्रेष्ठ श्रुताराधक है, धीर वीर गम्भीर ॥ ४ ॥

भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी, बोधिदिवस आया
आसाढ़ी तेरस दिन, मिले भाग्य से वीर ॥ ५ ॥

वर्धापन अवसर पर, शत-शत अभिनन्दन
करें कामना प्रतिपल, स्वस्थ रहे शरीर ॥ ६ ॥

तर्ज - आरती

आज धरा खुशहाल, धरती अम्बर मुस्काए

● साध्वी कलाप्रभा ●

आज धरा खुशहाल, धरती अम्बर मुस्काए।
युवाचार्य श्री के मनोनयन दिवस पर हर्षित पुलकित,
दशो दिशाएं गीत खुशी के गाएं।

आचार्य प्रवर ने संघ को दिया भव्य भव्य उपहार।
तेजस्वी वर्चस्वी युवाचार्यश्री को पाकर दिल में हर्ष अपार,
नयनाभिराम मनोनयन का दृश्य देख जन-जन का मन हरषाए।

शांत प्रशांत मनमोहक व्यक्तित्व आपका,
ऋजुता मृदुता सहज समर्पण शमदम उपशम प्रशस्त आपका।

मंगल भावों से आज बधाएं दिल का पोर-पोर,
खुशियों का सागर लहराए।

संघ की धरती पर आई उजली भोर,
आचार्य प्रवर ने दिखलाया दिव्य नजारा, दिल है हर्ष विभोर।

गुरु कृपा से, लाडनूं की पुण्यधरा पर युवाचार्यश्री को पाकर,
सबके दिल में खुशियों के बादल मंडराए।

युवाचार्य महावीर चयन से जन-जन में खुशहाली

● मुनि राजकुमार ●

युवाचार्य महावीर चयन से जन-जन में खुशहाली
पुलकित है गणमाटी ॥ ध्रुव ॥
सवाईचंदजी घर में जन्मे, धरा गगन गुंजाई
माँ भगनी बाई आंगने में नई रोशनी छाई
कोचर परिवार फलसुण्ड का, जिला बना बलशाली ॥ १ ॥

महाप्रज्ञ से दीक्षा लेकर जीवन को चमकाया
महाश्रमण से शिक्षा पाकर नव इतिहास रचाया
विराटनगर में मुख्य मुनि बन आभा नई बनाई ॥ २ ॥

श्रेष्ठ श्रुताराधाना, पी.एच.डी. सबके मन को भाई
किशनगंज में साझपति सुन कली-कली विकसाई
बड़पथार में पदस्थ सुनकर आई भोर रूपाली ॥ ३ ॥

धीर, वीर, गंभीर आप है, विनय समर्पणता भारी
सहज, सरलता, गुणग्राहकत्ता, गुण सारे सुखकारी
निज पौरुष से बढ़े बनी, जनता सारी मतवाली ॥ ४ ॥

बहुश्रुत परिषद के संयोजक, पल-पल आत्म निरीक्षण
गुरु दृष्टि की आराधन से मिलता निर्मल चिंतन
मुनि 'राज' की हृदय कामना, जीवन गौरवशाली ॥ ५ ॥

लय - संयममय जीवन हो...

युवाचार्य के मनोनयन का, सुन्दर अवसर आया है

● शासनश्री साध्वी यशोमती ●

युवाचार्य के मनोनयन का, सुन्दर अवसर आया है।
व्यक्त करूँ उल्लास हृदय का, मन मेरा ललचाया है।।

महाप्रभु श्री महाश्रमण ने, दृश्य अनोखा दिखलाया।
योगक्षेम वर्ष में हम सब पर, यह अमृत बरसाया।
विश्व भारती के आंगण में, नव इतिहास रचाया है।।

गण की प्रथम प्रथम मर्यादा, बनी रहे अक्षुण्ण सदा।
गणपति का महनीय कार्य है, पूर्ण हो गया आज मुदा।
दृश्य निहारा इन आँखों ने, क्षण क्षण मन पर छाया है।।

करें कामना विजय वरो, पग पग पर सुरभित सुमन खिले।
जहाँ जहाँ ये चरण टिके पावन, कण कण प्रभुवर को अमन मिले।।
कोटि कोटि दें पुनः बधाई, आनन्द का घन उमड़ आया है।।

तप की धुनी रमाते बीती

● साध्वी उज्ज्वलरेखा ●

आई दीवाली गण में, खुशियां छाई कण कण में
केसर बरसे मधुवन में, उजली उजली भोर ॥ आ ॥

धोरो की धरती में जन्मे, गण प्रांगण में फले फूले।
विनय समर्पण से पग पग पर, संतरंगे शतदल खिले।
दशों दिशाएं विहंस उठी, हर मानस हरस विभोर ॥

पारखी नजरे ज्योतिचरण की, ढूढ़ निकाला कोहिनूर।
संघ भाल पर युगो युगों, आलेख लिखे नूतन भरपूर।
युवराजा के राजतिलक से, निश्चिंत बने शिरमोर ॥

बहुश्रुत साधक, श्रुत आराध्य ऋजुता मृदुता है साकार।
महाप्रज्ञसी प्रज्ञा पाए, महाश्रमण श्रम के अवतार।
बनो चिरायु रहो निरा्मय, यश सुरभि चिहुं ओर ॥

तर्ज - भारत के नौजवानों ...

कोटि-2 वंदना अभिनंदन

● तुलसी उपसेवा केन्द्र, हिसार ●

प्रबल पुण्योदय से मिला नंदनवन सा संघ।
महाश्रमण दरबार में छाया अभिनव रंग।।

नेमासुत चिन्तन मनन गण में हर्ष अपार।
युवाचार्य का मनोनयन दृश्य बड़ा मनहार।।

महाप्रज्ञ कृपा हुई कि दीक्षा स्वीकार।
मुख्य मुनि महावीर है, महाश्रमण उपहार।।

मुनिवर श्री महावीर के सिर पर सजा है ताज।
कोचर कुल का लाडला है हम सबको नाज।।

योगक्षेम बरस का दृश्य बड़ा सुखकार।
चार तीरथ का ठाठ है खुशियां मन अनपार।।

श्री भिक्षु का जन्मदिन आषाढ महिना खास।
युवाचार्य महावीर का मनोनयन दिन आज।।

वर्धापन की शुभ घड़ी, प्रमुदित सकल समाज।
कोड़ दिवाली तप तपो अन्तरमन आवाज।।

महाश्रमण गुरुराज के सक्षम पट्टधर आप।
धीर, वीर, गम्भीरता का ना कोई माप।।

मृदु मोहक मुस्कान ही है तेरी पहचान।
महाश्रमण दृष्टि टिकी, बन गए गण की शान।।

चातुर्मास का समय धर्म आराधना का विशेष काल

साहूकारपेट, चेन्नई।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी नचिकेता मुनि आदित्य कुमारजी ठाणा 2 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश तेरापंथ भवन साहूकारपेट चेन्नई में हुआ। स्वागत अभिनंदन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अजीत चोरडिया एवं अमृतवाणी के अध्यक्ष ललित दूगड़ थे। डॉ मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा चातुर्मास का समय धर्म आराधना का विशेष काल है। इसमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप में ज्यादा से ज्यादा श्रावकों को समय नियोजित करना चाहिए। चातुर्मास को जैन शास्त्रों में वर्षावास अथवा पावस प्रवास भी कहा जाता है। मुनि श्री ने आगे कहा इस वर्ष साहूकारपेट तेरापंथ सभा भवन में सभी श्रद्धालुजनों के लिए चातुर्मासिक धर्मोत्सव 2026 के अंतर्गत ज्ञानोत्सव, संयमोत्सव, चारित्रोत्सव, जपोत्सव एवं तपोत्सव की आराधना करवाई जाएगी। चातुर्मास मे रात्रि भोजन का त्याग, जमीकंद का त्याग नवकार महामंत्र का एवं सीमांधार स्वामी का जाप करने की मुनिश्री ने प्रेरणा दी। आदित्य मुनि ने गीत प्रस्तुत किया। सभा अध्यक्ष महेंद्र मांडोत ने पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वागत अभिनंदन किया। साहूकार ट्रस्ट बोर्ड अध्यक्ष तनसुखलाल नाहर, मुख्य अतिथि रजत के अध्यक्ष अजित चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष कोमल डागा, अणुव्रत अध्यक्ष सुभद्रा लुणावत आदि ने अपनी भावनाओं रखी। संचालन मंत्री चन्द्रेश चिप्पड़ ने किया। धन्यवाद संगठन मंत्री प्रवीण समदड़िया ने दिया।। जानकारी सभा के प्रचार प्रसार प्रभारी संतोष सेठिया ने दी।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

छलक रहा भावों का दरिया

● शासनश्री साध्वी सुमनश्री ●

छलक रहा भावों का दरिया, वर्धापन का गीत सुनाए ।
सारे उत्सव एक हो गये, सौ सौ ये सावन लहराए।।

महाप्राण श्री महाश्रमण ने पल-पल करुणा रस से सींचा,
दिव्य दृष्टि से परख निरब्व कर भावी का नक्शा है खींचा,
कर कमलों से सिंचित कृति में अद्‌भुत सूरज चाँद उगाए।।

स्फटिक तुल्य यह आभामंडल देख-देख मन मुदित हुआ है,
संघ शिखर पर जैसे कोई स्वर्णिम सूरज उदित हुआ है,
सतरंगी किरणों ने अभिनव उजले उजले छंद रचाए।।

रोम-रोम सब आँख हो गई, साखी ज्यों कबीरा की,
पौर-पौर रस पूरित पाई खुशियां सकलधरा की,
यह बासंती मौसम मानो सुधाचांदनी रस बरसाए।।

पुण्य अर्चना के अवसर पर श्रद्धा का मैं अर्घ्य चढ़ाऊं,
संकल्पों की दिव्य ज्योति से पल-पल तुमसे ऊर्जा पाऊं।
प्रभो! प्रणत्त हम श्री चरणों में संकेतो पर कदम बढ़ाए।।

महाश्रमणप्रभु भाग्य विधाता

● साध्वी राकेशकुमारी ●

महाश्रमणप्रभु भाग्य विधाता, कैसे भाग्य सजाते
गण गुलशन फूल खिलाते, हम अपना भाग्य सराते॥

फलसुण्ड धरा पर झोपड़ी में जन्मे रोशनी लेकर
कोचर कुल का कच्चा प्रांगण बांटे पताशा घर घर
महावीर युवराज बने है, मंगल घोष सुनाते
हम अपना भाग्य सराते॥

पिता सवाईचन्द के लाल दुलारे माँ छगनी के लाल
जन्मभूमि फलसुण्ड का तुमने किया ऊंचा भाल
मोह माया का बंधन तोड़ा संयम पथ अपनाते॥
हम अपना भाग्य सराते॥

भोला भाला महावीर बालक, महाप्रज्ञ चरण में आया
शिल्पिकार बन महाश्रमण ने मुनि का रूप सजाया
युवाचार्य की कर नियुक्ति गण गौरव शिखर चढाते
हम अपना भाग्य सराते॥

त्रिशताब्दी पावन अवसर, गण को किया निहाल
युवाचार्य चयन मनभावन, दिव्य चमकता भाल
शुभभावों से वर्धापन कर, मंगल तिलक लगाते
हम अपना भाग्य सराते॥

युवाचार्य मनोनयन का, अद्भुत दृश्य दिखाया
जय नारों से गूंजी धरती, नव उल्लास छाया
आई आज दीवाली गण में, सुर-नर शंख बजाते।
हम अपना भाग्य सराते॥

विनय समर्पण सहज सरलता गुरु, दिल में स्थान जमाया
आज्ञा सेवाभाव तुम्हारा संघ में सबको लुभाया
मेधावी प्रतिभा प्रज्ञा लख, हर्षित पुलकित शीश नमाते
हम अपना भाग्य सराते॥

भिक्षु शासन नन्दनवन की स्वस्थ परम्परा न्यारी
युवाचार्य आचार्यप्रवर की जोड़ी लगती प्यारी
कोड़, दीवाली तपो धरा पर अभिवंदन कर हरसाते, हम अपना भाग्य सराते।
वर्धापना कर पाते, मंगल घोष सुनाते, हम शत शत बार बधाते॥

तर्ज – जहां डाल डाल पर

नव्य नूतन युवाचार्य का गौरव गाएं अपार

● मुनि आलोक कुमार ●

सजाएं श्रद्धा का उपहार, नव्य नूतन युवाचार्य का, गौरव गाएं अपार॥

अनुपम आभामंडल तेरा, जग में नव आलोक बिखेरा,
फैला चहुंदिशि दिव्य सवेरा,
मुस्काती नयनों से होता, सबका दिल गुलजार॥

गौरवशाली कुल को पाया, मात-पिता का भाग्य सवाया,
शुभ सुखदायक अवसर आया,
विनय, समर्पित मूरत को पा, पुलकित है संसार॥

गुरु महाश्रमण ने शिखर चढ़ाया, भैक्षवशासन को विकसाया,
युवाचार्य महावीर बनाया,
गुरुकृपा से बन गए हो तुम, हम सबके आधार॥

खुशियों का शुभ दिन यह आया, जन-जन का मन है हर्षाया,
मंगल क्षण यह गदग में आया॥

भाव-विभोर हो करते हिममुनि, भाई का सत्कार,
मुनि आलोक आज बधाता, तुमको बारम्बार॥

लय - प्रभो! यह तेरापंथ महान

जय ज्योतिचरण जय महाश्रमण निर्णय को करें नमन

● साध्वी राजुलप्रभा ●

जय ज्योतिचरण जय महाश्रमण निर्णय को करें नमन।
नवनिर्वाचित युवराजप्रवर! लो गण का अभिनन्दन, झेलो भक्ति वन्दन॥

संप्रज्ञ शिष्य वरदाई, गुरु ने भूमिका बनाई
मुनि महावीर आओ कह, उज्ज्वल चादर ओढ़ाई
छाई पुलकन अवनी रोशन अम्बर में जय गुंजन॥

जो स्क्रीन पे सीन निहारा, अन्तर मानस मुसकाया
गुरुवर ने हाथ पकड़कर, बैठो पट्ट पर फरमाया
जब करद्वय से सिर सहलाया, हुए मुदित सहस्र-नयन॥

पहले ही उद्बोधन में, बही कृतज्ञता की धारा
गुरु महाश्रमण चरणों में, गुरु तुलसी गीत उचारा
निर्माण किया जिन हाथों ने, उन सबका किया स्मरण॥

संतों सतियों ने बधाया गण गौरव शिखर चढ़ाया
गुरुदृष्टि में सृष्टि है, गण ने सम्मान बढ़ाया
है तेरापंथ अद्भुत अनुपम, साक्षी वो दुर्लभ क्षण॥

लय - आ चल के तुझे

कोचर कुल के कोहिनूर

● डॉ. साध्वी सुधाप्रभा ●

युवाचार्य महावीर को, हम सब आज बधाएं रे।
करते अभिनंदन तेरा, खुशी मनाएं रे॥

तेरापथ-गण-प्रांगण में, आई आज दीवाली है।
महाश्रमण प्रभु पट्टधर को, पा अभिनव खुशहाली है॥
गण के युवराजा को हम, शीश झुकाएं रे।

महाप्रज्ञ प्रभु से पाया, संयम का तुमने उपहार।
श्रेष्ठ श्रुताराधक को हम, वंदन करते बार हजार॥
पहले मुख्य-मुनि की हम, महिमा गाएं रे।

महाश्रमण गुरुराज ने, युवाचार्य पद बगसाया।
नाम सुन महावीर का, जन-जन का मन हरसाया॥
बहुसुत परिषद संयोजक, मन को भाए रे।

कोचर कुल के कोहिनूर! चमक रहा है तेरा भाल।
मुनिप्रवर महावीर तुम गण के हो भावी गणपाल॥
तुमको पाकर हम अपना भाग्य सराएं रे॥

वीर-गोयम सी यह जोड़ी, युगों-युगों तक राज करें।
गणमाली गण-कलियों में, हर पल नव उल्लास भरें॥
तेरा शासन वरदायी, बढ़ते जाएं रे।

लय - जीवन है पानी

अभिनंदन! वंदन स्वीकारो! इस युग के महावीर!

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●

अभिनंदन! वंदन स्वीकारो! इस युग के महावीर!
महाश्रमण करुणा से गण की चमक रही तकदीर।।

रोम-रोम आनंद छलकते, पुलकित मन के पोर,
युवाचार्यवर पाकर छाई गण में हर्ष हिलोर,
गुण सुमनों की सौरभ लेकर बहता सौम्य समीर।।
अभिनंदन! वंदन!...

धन्य धरा फलसुंड आज, धन्य छगनी माताजी,
धन्य सवाईमलजी श्रावक परिकर पूरा राजी,
रत्न अमूल्य दिया संघ को धीर, वीर गंभीर।।
अभिनंदन! वंदन!

जीवन की हर भोर सुहानी नई रोशनी लाएं,
सांझ सुरमई नित संयम के नूतन चांद उगाएं,
शीश झुकाऊं चरण पखारूं लेकर श्रद्धानीर।।
अभिनंदन! वंदन!

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

❖ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

सर्वांन्गुणानेष गुणो विभाति

● मुनि अनंत कुमार (1) ●

प्रश्न है कि बड़ी कंपनियां, संस्था, संगठन में किसी को सर्वोच्च पद देते समय क्या देखा जाता है?

समाधान में कहा गया कि - किसी को बड़ा पद, सर्वोच्च स्थान देते समय चयन करने वाला दो 'C' को देखता है।

(i) प्रथम 'C' = Competence अर्थात सामने वाले की निजी योग्यता।

(ii) दूसरा 'C' = Comfort अर्थात नियुक्ति करने वाला आपके साथ आसानी से काम कर सके।

कहने को तो Competence प्रथम शर्त रखी गई है जो सही भी है। परंतु व्यावहारिक रूप से दूसरी शर्त Comfort प्रमुख है। इसके बिना आपकी योग्यता महत्वपूर्ण तो बहुत है पर उस व्यक्ति के कतई काम की नहीं जो आपको नियुक्त कर रहा है। इन दो विशेषताओं के साथ कुछ और गुण हों जैसे (i) ईमानदार हो (ii) अथक परिश्रम करने वाला हो (iii) गांभीर्य हो (iv) लोगों के बीच जुड़ा रहे (v) स्वयं कुछ कर गुजरना चाहता हो।

कोई भी किन्तु Comfort सबसे पहले और सबसे अधिक देखेगा।

तभी कहा भी गया है कि - 'बहुत सारे लोगों के द्वारा पहचाने जाने से तो कुछ लोग हमें चाहते हों यह अच्छा है। और कुछ लोग हमें चाहे उससे भी अच्छा यह है कि एक महान-श्रेष्ठ व्यक्ति के हम प्रेमपात्र-विश्वासपात्र और प्रिय पात्र बन जाएं।'

(2) नवमनोनीत युवाचार्यवर के जीवन में यह बात शत प्रतिशत परिलक्षित हो रही है कि वह परम पूज्य आचार्य प्रवर के लिए Comfort है और आचार्य श्री के दिल में प्रेमपात्र - विश्वासपात्र व प्रियपात्र के रूप में अंकित हो गए हैं। वे अब comfortable महावीर बन गए हैं।

विदुर नीति में कहा गया है -

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति,
प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च, दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च।।

अर्थात् प्रज्ञा, कुलीनता, दम, श्रुत, पराक्रम, मितभाषिता, दान और कृतज्ञता यह आठ गुण जिसके जीवन में स्थिर है उसका जीवन दीप्तिमान है। उससे भी आगे कहा गया है -

एतान् गुणांस्तात महानुभावानैको गुणः संश्रयते प्रसह्य।
राजा यदा सत्कुरुते मनुष्यं, सर्वांन्गुणानेष गुणो विभाति।।

अर्थात् ऊपर बताएं सब गुणों से भी एक गुण ऐसा है जो व्यक्ति को विशिष्टतम रूप से दैदीप्यमान करता है वह गुण है - राज सम्मान अर्थात् राजा की ओर से सम्मानित करना।

तेरापंथ धर्मसंघ के सरताज आचार्य श्री महाश्रमण जी के द्वारा युवाचार्य बनाने के साथ-साथ हमने देखा कि अपने पट्ट पर युवाचार्यश्री को बिठाना उनका सर्वाधिक सम्मान है। ऐसे विनम्र, सहज, सरल, सेवाभावी, शांत, सद्गुणों के भंडार भावी आचार्य को पाकर संपूर्ण तेरापंथ समाज अपने में गर्व का अनुभव कर रहा है। इस गर्वानुभूति के क्षणों में एक घटना याद आती है कि - 'मंदिर की सालगिरह का दिन था। दर्शनार्थियों की भीड़ लगी। उस भीड़ में एक अंधा व्यक्ति भी था। लोगों की धक्का-मुक्की से गिर गया, खड़ा हुआ, चला। रास्ते में पत्थर से टकराया और फिर गिर पड़ा। पुनः चला। उसे चलता देख किसी ने पूछा कि- 'तुम अंधे हो, देख नहीं सकते फिर भी भगवान् के दर्शनार्थ क्यों दौड़ता है? क्या तुम भगवान् को देख पाओगे?' उस अंध व्यक्ति ने उत्तर दिया कि- 'मैं अंधा हूँ इसलिए चाहे भगवान् के दर्शन नहीं कर पाऊँ, परन्तु भगवान् तो अंधे नहीं हैं ना! भगवान् की दृष्टि मेरे पर गिर जाएगी तो काम हो जाएगा, मैं न्यार हो जाऊंगा।

अतः युवाचार्य श्री के चरणों में वर्धापन की श्रेणी में यह भावांजलि है कि - आपश्री का साक्षात् वर्धापन करने का मुझे सौभाग्य नहीं मिला है। परन्तु समर्पण भाव से इतनी-सी ख्वाइस है कि आपश्री की कृपादृष्टि हम तक भी पहुँच जाएगी तो हमारा काम हो जाएगा। मैं धन्य-धन्य बन जाऊँगा।

महावीर परंपरा के युवाचार्य महावीर

● डॉ साध्वी परमयशा ●

जिनकी हर भोर जागरूकता के साथ शुरू होती है और हर शाम रचनात्मक उपलब्धियों से भरी होती है। आचार्य महाश्रमण जिनके आवास विश्वास दीप हैं, जिनके भीतर उत्तेजना का switch off और शांति, समता, सहजता व सरलता का switch on रहता है। जो महावीर की परंपरा के यशस्वी युवाचार्य होकर नया सृजन, नए आलेख और नई रेखाएं खींचेंगे; क्योंकि शांतिदूत महातपस्वी गुरुदेव की छत्रछाया उनके साथ है। कई रोचक आंकड़े युवाचार्य महावीर की गौरव-गरिमा को सहस्रगुणित करते हैं।

तेरापंथ के नवम युवाचार्य

युवाचार्यों की परंपरा में मुख्य मुनि महावीर से युवाचार्य महावीर के रूप में एक नयी कड़ी जुड़ गयी। आचार्य महाश्रमण जो भी करते हैं, नया सोचते हैं और अपने विचारों से दुनिया को रोमांचित कर देते हैं। नौ का अंक अक्षय होता है। युवाचार्य महावीर भी नौ के अंक से अक्षय अचल हस्ताक्षर बन गए हैं।

भिक्षु बोधि दिवस पर नया इतिहास

भिक्षु बोधि दिवस बोधिलाभ का प्रेरणास्पद पृष्ठ है, जिसे आचार्य महाश्रमण ने बहुआयामी बना दिया। मुख्यमुनि को उसी दिन युवाचार्य बनाकर बोधि दिवस का पुनर्जन्म कर दिया। इस अभूतपूर्व दृश्य को देखकर सभी का मस्तक श्रद्धा से नत हो गया।

सिवांची मालाणी की धन्य धरा

आचार्य प्रवर ने सिवांची मालाणी की वसुंधरा को विस्मित कर दिया। जब इस धरा के सुकुमार युवा संत प्रथम युवाचार्य बने, तो यह भूमि गर्व से धन्य हो गयी, जिसके वीर सपूत ने सिवांची मालाणी के प्रांगण में स्वास्तिक रच दिए।

धन्य हैं माता-पिता

फलसूंड के माता-पिता का यह परम सौभाग्य है कि उनके आंगन में कल्पवृक्ष तुल्य बाल-गोपाल का जन्म हुआ, जो आचार्य महाश्रमण की शरण में भावी भाग्य-विधाता बन गया। वे प्रथम माता-पिता हैं जिन्होंने अपने पुत्र को विकास के क्षितिज छूते, विदेश यात्रा करते, Ph.D. प्राप्त करते, मुख्य मुनि के रूप में और आचार्यश्री के साथ पट्ट पर आसीन देखा। मां का पल्लू पकड़कर चलने वाला महावीर, आज महाश्रमणजी की परछाई बन चुका है।

प्रथम श्रेष्ठ श्रुताराधक अलंकरण

मुनि महावीर 'श्रेष्ठ श्रुताराधक' अलंकरण से सम्मानित होकर समग्र संघ के लिए श्रद्धास्पद बन गए। शिक्षा के क्षेत्र में स्वर्णपदक से सम्मानित प्रथम युवाचार्य संघ के प्राण बन चुके हैं।

तेरापंथ की राजधानी लाडनूं हुई धन्य

लाडनूं को तेरापंथ की राजधानी का यश तब मिला जब मुख्य मुनि को युवाचार्य पदवी इसी पावन भूमि पर मिली। यह गौरव तुलसी गुरुदेव की जन्मभूमि को प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती संस्थान और योगक्षेम वर्ष को भी यह सौभाग्य मिला। योगक्षेम वर्ष आचार्यश्री के शासनकाल की महान उपलब्धि है, जिसमें 30 संत, 378 साध्वीजी और 50 समणीजी की सहभागिता एक अभूतपूर्व कीर्तिमान है। आचार्यश्री ने युवाचार्यश्री को प्रथम प्रभात से ही लब्धियों व सिद्धियों का खजाना प्रदान किया।

विदेश की धरा को मापा दो पैरों से

आचार्यप्रवर के सहयात्री युवाचार्य महावीर भारत से बाहर विदेशों में भी पदयात्रा करने वाले प्रथम यायावर हैं। भूटान, नेपाल, काठमांडू आदि क्षेत्रों के लोग उन्हें पाकर प्रफुल्लित हैं।

बहुश्रुत परिषद् के संयोजक

बहुश्रुत परिषद् के सर्वसर्वा आचार्य प्रवर हैं। इसमें संयोजक पद प्रदान कर आचार्यश्री ने युवाचार्य की गरिमा बढ़ा दी। इस गरिमामयी परिषद् का संयोजक युवाचार्य पद पर मनोनीत हो, यह महातपस्वी की महान देन है।

महावीर पाठशाला हुई गौरवान्वित

आचार्यप्रवर ने मुख्यमुनि को महावीर पाठशाला का नेतृत्व सौंपा था। जब इसके संयोजक प्रथम युवाचार्य पद पर मनोनीत हुए, तो विद्यार्थियों व संतों का रोम-रोम पुलकित हो उठा। धर्मसंघ में उल्लास का सैलाब है

आचार कुशलता का जिनके पास है Nutrition...

गण गाणि निष्ठा का जिनके साथ है प्रशिक्षण

बाहुश्रुत्य नैपुण्य का प्रकाश है यह मनोनयन

चिरायु शतायु हो युगल जोड़ी के दुर्लभ क्षण॥

गुरुवर त्रिभुवन तिलक, परम तितिक्षावान

● मुनि मोहजीतकुमार ●

गुरुवर त्रिभुवन तिलक, परम तितिक्षावान
युवाचार्य को प्रकट कर, दिया संघ वरदान ॥

निरभिमानता योग से, स्व आभा विकसाई
गुरु दृष्टि, सृष्टि बनी, गण में ख्यात खताई ॥

करुणा, समता, शुभ्रता, गण उन्नति संज्ञान
श्रेष्ठ श्रुताराधक बने, बढ़ी संघ की शान ॥

हम सबके आदर्श हैं, निश्छलता सरसाई
महर नजर हम पर सदा, हर पल रहे सवाई ॥

मन भावों वन्दन करूं, भावी गण सरताज
हत तंत्री अभ्यर्थना, स्वीकारो युवराज ॥

नवमा युवराज पधारया

● डॉ. समणी मानसप्रज्ञा ●

धन्य हुयो ओ आंगणियो, बरस्यो सुख रो सावठिणयो
पावन फगल्या री आज म्हें, करा वंदना।
नवमा युवराज पधारया, करां वंदना।।

विद्या विनय विवेक त्रिवेणी स्युं शोभित जीवन उपवन
महाश्रमण गुरुगुण सौरम स्यु सुरभित मंगलमय हर क्षण,
खुशियां । नव दीप जल्या, सबरा संचित पुण्य फल्या ।।

शासन में वरदान बढ्यो हो, हेमऋषि रो पगफेरो,
वर्धमान हो श्रेणी संख्या, विकसित पुलकित हर चेहरों,
तुलसी रो अनुपम अवदान, सदा बढ़ाक गठण री शान।।

प्रोत्साहन अक मिले प्रेरणा, गण रो नाम करो रोशन
वत्सलधार नहै भेनी पर, मिले सदा ही अपगोपन कदमों
पर बढता जाक, प्रगति शिखर चढतां जा।।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

एक दृश्य: अनेक अनुभूतियां

● साध्वी ऋद्धिप्रभा ●

आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को युवाचार्य मनोनयन का नयनाभिराम दृश्य देखकर मेरे मन में जिज्ञासा हुई—क्या वह दृश्य केवल उतना ही था जितना हमें खुली आँखों से दीख रहा था? स्वयं से ही जवाब मिला—नहीं, उस दृश्य के भीतर अनेक दृश्य अभिव्यक्त हो रहे थे जिसका मैंने अनुभव किया।

हम सबके लिए वह क्षण 'आचार्य अपने गुरुभाई या शिष्य को उत्तराधिकारी के रूप में चुने तो सभी उसे सहर्ष स्वीकार करें'—तेरापंथ की इस मौलिक मर्यादा को जिसे हम वर्षों से सुनते आ रहे हैं, बोलते आ रहे हैं, उसे अनुभूत करने का भी महावीर-तुल्य अपूर्व अवसर था।

आचार्य प्रवर द्वारा जब अत्यंत प्रसन्नता पूर्वक 'आओ मुनि...' का आह्वान किया गया तो दर्शकों के भीतर हलचल थी, अगला दृश्य देखने की उत्सुकता थी। पर जिन्हें आह्वान किया गया था, उनके मुखारविंद पर सहजता थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि भीतर में स्थिरता और समता थी। अभ्यर्थना युवाचार्य प्रवर के तटस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व की।

आचार्य प्रवर ने ओजस्वी वाणी में युवाचार्य पद की घोषणा की और युवाचार्यश्री को उत्तराधिकार की चादर ओढ़ाई। जब युवाचार्य प्रवर ने उस उत्तराधिकार की चादर को उत्तरदायित्व की चादर के रूप में स्वीकार किया तो ऐसा लगा मानो निरहंकारिता का साक्षात् प्रकटीकरण हुआ हो। वर्धापना युवाचार्यश्री की निरहंकारी निस्पृह चेतना की।

जब युवाचार्य प्रवर ने आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आचार्य प्रवर के चरणों में तथा गोद में मस्तक को रखा और आचार्यप्रवर ने अपने हस्तकमलों को युवाचार्य प्रवर के मस्तक पर रखा, और अपने ही पास अपने पट्ट पर बिठाया तो ऐसा अनुभव हो रहा था मानो शक्ति-संप्रेषण की प्रक्रिया चल रही थी। उस प्रक्रिया में एक ओर से वात्सल्य के साथ शक्ति को भेजा जा रहा था तो दूसरी ओर से युवाचार्य प्रवर के द्वारा विनम्रता के साथ उसे ग्रहण किया जा रहा था।

अभिवंदना युवाचार्यप्रवर की उत्कृष्ट विनम्रता की।

अभ्यर्थना उन सभी गुणों की जिन गुणों के कारण आप आचार्यप्रवर की पारखी नजरों में खरे उतरे।

वर्धापना उन सभी गुणों की जिन गुणों ने आपको तेरापंथ का ताज धारण करने योग्य बनाया।

अभिवंदना उन सभी गुणों की जिन गुणों ने संपूर्ण धर्मसंघ को आश्वासन दिया — 'शुभ भविष्य है सामने'।

गण नन्दनवन में बाजै है चंग मृदंग उमंग रा

● साध्वी संगीतप्रभा ●

गण नन्दनवन में बाजै है चंग मृदंग उमंग रा,
गण गगनांगण में उमड्या घनवृन्द अमन्द आनंद रा,
गण नन्दनवन में...

भिक्षु रै शासण में निरख्या नूई-नूई रचनावां,
नयण निहाल निभाल नजारा-2, सार्थक छन्द सुणावां जी।
गण नन्दनवन में...

पद युवराज, साज, राज, धुर काज जबर औ कीनो,
दृढ़ निरणो रसभीनो-2 लीनो, दीनो भव्य नगीनो जी।
गण नन्दनवन में...

भि. भा. रा. ज. म. मा. डा. का सुण-2 कीरत हरखावै,
तुलसी महाप्रज्ञ सुरंगा में-2 पुलक-2 पोमावै जी।
गण नन्दनवन में...

धोरां री धरती पर उग्यो नानूड़ो भानूड़ो,
साधूडो, रूड़ो, सागीडो-2, तपसी ओ रणवीरो जी।
गण नन्दनवन में...

महाप्रज्ञ स्यूं दीक्षित, शिक्षित और परीक्षित भारी,
जुड़ी अभिप्सित और प्रतीक्षित-2, महाश्रमण एकतारी जी।
गण नन्दनवन में...

जसवल री धरती पर सिरजी सूरत आ कल्याणी,
गुरुद्वय स्यूं छाणी पितवाणी सुणबां रे मनभाणी जी।
गण नन्दनवन में...

रहो निरामय बणो सुधामय, पग-2 विजय वरीज्यो,
महाश्रमण अधिराजा युवराजा जबरो जस लीजो जी।
गण नन्दनवन में...

तर्ज : म्हारी रस सेलड़ियां

वर्धापनाष्टकम्

● मुनि जयेश कुमार ●

पुण्याभा प्रणवांकशोभियतिः शान्तः क्षमाशीलधृक्
तेजोयुक्तसुवर्णकान्तिरुचिरो हर्षाभिसिक्ताननः।
आज्ञां श्री गुरुसत्तमस्य शिरसा धृत्वा विनीतो भृशं
संघे मौलिमणिः विभाति स युवाचार्यो महावीरराट्॥

जातो यो फलसूंडमंडिततले श्रद्धाकुले कोचरे
तातो यस्य सवाईचंद विदितो माता च छग्नी मही।
बाल्ये यो विलसत्प्रभा सुललितो मेधागुणैः पूरितः
संघे मौलिमणिः विभाति स युवाचार्यो महावीरराट्॥

साध्वीनां निकटे स्वधर्मनियमान् बालोऽपि धृत्वा स्थितः
दृष्ट्वा तस्य विलक्षणं सुचरितं साध्वी प्रहर्षाकुला।
भावी तीर्थपतिर्विभाति जगति ज्ञात्वाथ संघस्य श्रीः
संघे मौलिमणिः विभाति स युवाचार्यो महावीरराट्॥

वैराग्योदित भावमंडितमतिः श्रीमन्महाप्रज्ञतः
त्यक्त्वा मोहमयीं विलासिरचनां संघाय दत्तात्मकः।
बाल्ये संयममार्गसत्यगमने धृत्वा सुसंकल्पनां
संघे मौलिमणिः विभाति स युवाचार्यो महावीरराट्॥

तस्मिन् सुप्रथिते जसोलनगरे फाल्गुन्यमासे वरे
दीक्षां प्राप्य गुरोः करात् स मुनिवर्यो वीरनाम्ना धृतः।
सत्यज्ञानतपोमये सुचरिते मार्गे सदैवास्थितः
संघे मौलिमणिः विभाति स युवाचार्यो महावीरराट्॥

ज्ञाने यो विपुलो सुकोविदमुनिः प्राप्नोति विद्याश्रियं
वाणी यस्य सुकोमला श्रुतिसुखा कंठे धृताः सूक्तयः।
ग्रंथानां पठने सुतीव्रमतिमान श्रेष्ठः श्रुताराधकः
संघे मौलिमणिः विभाति स युवाचार्यो महावीरराट्॥

सेवायां गुरुपादपद्मयुगले नित्यं रतः श्रद्धया
आचार्यप्रवरात् महाश्रमणतो मुख्यं पदं प्राप्तवान्।
नेपाले ह्यसमे तथा शुभदिने घोषाः कृताः यस्य वै
संघे मौलिमणिः विभाति स युवाचार्यो महावीरराट्॥

दिव्ये भैक्षवशासने सुखकरे श्रीराजधान्यां वरे
संघेशान्मुदितान्महाश्रमणतः संघस्य मध्ये स्वयम्।
प्रादात् स्वं पदमुत्तमं प्रमुदितः हस्ते मुनेर्धीमतः
संघे मौलिमणिः विभाति स युवाचार्यो महावीरराट्॥

अतिरिक्तं

यस्याध्यापनतस्त्वहं गुणमयं प्राप्नोमि सत्प्रेरणां
ध्यात्वा श्रीचरणाम्बुजं सविनयं भक्त्या जयेशो मुनिः ।
आसीनं युवराजपट्टशिखरे संवीक्ष्य हृष्याम्यहं
हर्षोत्कर्षभरैः प्रमोदितमनो वंदे महावीरकम् ॥ ९ ॥

छन्द - शार्दूलविक्रीडित

मुख्य मुनि से युवाचार्यश्री महावीर तक का सफर

● डॉ. धर्मचन्द जैन, भीलवाड़ा ●

ऐतिहासिक एवं अभिनव निर्णय:

परम पूज्य, महात्यागी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी अपने अद्वितीय निर्णय लेने के लिए प्रख्यात रहे हैं। आपने अपने शासनकाल में अनेक नवाचार किए हैं। 'मुख्य मुनि' और 'साध्वी वर्या' जैसे नए पदों का सृजन करके आपने तेरापंथ धर्मसंघ को दो अभिनव संस्थाओं का उपहार दिया है।

परंपरा का पुनरुद्धार:

इसके अलावा, आपने अपने दीक्षा गुरु मुनिश्री सुमेरमलजी लाडनूं को 'मुख्य मुनि' पद पर प्रतिष्ठित करके तेरापंथ धर्मसंघ में इस संस्था को पुनर्जीवित करने का भी कार्य किया।

मुख्य मुनि पद पर मनोनयन:

नेपाल के विराटनगर में पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुनिश्री महावीर कुमारजी को 'मुख्य मुनि' पद पर प्रतिष्ठित करके भविष्य का संकेत दे दिया था।

युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठापन:

विराटनगर से मुख्य मुनि महावीर कुमारजी का प्रारंभ हुआ यह सफर, योगक्षेम वर्ष तथा परम पावन आचार्यश्री भिक्षु की त्रिशताब्दी समारोह की संपन्नता पर युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने के साथ पूरा हुआ।

ऐतिहासिक समारोह:

परम पूज्य आचार्य प्रवर ने 26 जुलाई, 2026 ई. को जैन विश्व भारती, लाडनूँ की सुधर्मा सभा में मुनि महावीर कुमारजी को युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने के साथ ही अपने पवित्र कर-कमलों से नवनियुक्त महावीर कुमारजी को चादर ओढ़ाकर धन्य कर दिया।

हर्ष की लहर एवं गुणों का आकलन:

पूज्य आचार्य प्रवर के इस युवाचार्य मनोनयन के निर्णय से देश-विदेश के तेरापंथ धर्मसंघ में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। पूज्य आचार्य प्रवर ने अपने शिष्य की श्रद्धा, समर्पण, सादगी, सेवा भावना तथा तेजस्विता के गुणों का आकलन करके यह निर्णय लिया है।

नूतन इतिहास का सृजन:

यह निर्णय अप्रत्याशित नहीं था, लेकिन इतने विशाल साधु-साध्वी समाज की उपस्थिति में ऐसा निर्णय करके आपने शिष्य समुदाय को भी आह्लादित कर दिया तथा एक नव-इतिहास का सृजन किया। इस निर्णय के लिए पूज्य आचार्य प्रवर के प्रति कृतज्ञता तथा नवनियुक्त युवाचार्यश्री के प्रति आदर एवं मंगलकामनाएं। युवाचार्यप्रवर को हार्दिक बधाई और शुभकामना।

संपूर्ण संघ युवाचार्यप्रवर से यही अपेक्षा करता है कि:

आप पूज्य आचार्य प्रवर के इंगित को ही आदेश मानकर कार्य करें।

आप पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य तथा करिश्माई नेतृत्व में अपना सर्वांगीण विकास करते रहें। इसी मंगलकामना के साथ।

❖ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
10 अगस्त - 16 अगस्त 2026

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

युवाचार्य श्री का जीवन निर्मल गंगा के समान है

उत्तर मध्य दिल्ली।

साध्वी कुन्दनरेखा के सांनिध्य में एवं तेरापंथ सभा उत्तर मध्य दिल्ली के तत्वावधान में 'युवाचार्य वर्धापना समारोह' हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक अशोक गोयल भी उपस्थित रहे। साध्वी कुन्दनरेखा जी ने अपने विचारों की प्रस्तुति देते हुए कहा – 'गौरवशाली शासन की गौरवशाली परंपरा को नमन! तेरापंथ का इतिहास अनेकों कीर्तिमानों का समवाय है।

मर्यादा और अनुशासन से सुसज्जित इस धर्मसंघ में एक आचार्य की आज्ञा सर्वोपरि है, वंदनीय है। उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपने उत्तराधिकार की चादर युवाचार्य महावीर को जैसे ही ओढ़ाई, पूरा धर्मसंघ नाच उठा। खुशियों का सैलाब उमड़ने लगा। सचमुच वह मनमोहक दृश्य अविस्मरणीय बन गया। आचार्यप्रवर एवं युवाचार्य प्रवर गुणों के भंडार हैं। आपका संयम, समता, उपशम का भाव अनूठा है। वर्तमान युग में उत्कृष्ट वैराग्य देखकर सब नतमस्तक हैं। यह युगल जोड़ी अमर रहे एवं धर्मसंघ अपने प्रभु के अनुशासन में निरंतर आध्यात्मिक विकास करता रहे, हम यह शुभकामना करते हैं।'

साध्वी सौभाग्ययशा ने कहा – 'युवाचार्य प्रवर का जीवन निर्मल गंगा के समान उज्ज्वल है। युवाचार्य प्रवर की साधना अनूठी है। युवाचार्य प्रवर की विनम्रता और समर्पण बेजोड़ है। उत्कृष्ट वैराग्य, सहिष्णुता एवं गुरुभक्ति अनूठी है। हम सौभाग्यशाली हैं कि आचार्यप्रवर की सूक्ष्म निगाहों ने कोहिनूर हीरे को परखकर संघ का सर्वोच्च बना दिया। गुरुदेव एवं युवाचार्य की जोड़ी हमेशा संघ की सारणा-वारणा करती रहे और हम सभी आज्ञानुसार अपने संयमी जीवन को शुद्ध-शुद्धतम करते रहें।'

साध्वी कल्याणयशा ने कहा – 'महावीर मुनि को मुख्य मुनि और युवाचार्य प्रवर के रूप में देखकर हम आनंदित हैं, पुलकित हैं। यह सब आचार्य प्रवर की दूरदृष्टि और कृपा का प्रसाद है। शत-शत नमन!' कार्यक्रम में तेरापंथ सभा मध्य दिल्ली के कर्मठ अध्यक्ष सुरेन्द्र गोलछा, उत्तर दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष - इन्दिरा सुराणा, महिला मंडल उत्तर दिल्ली की पूर्वाध्यक्ष मधु सेठिया, सभामंत्री - प्रकाश पारख, युवक परिषद ने गीत का संज्ञान किया। विधायक अशोक गोयल 'देवरा' ने आज के दिन अतिरिक्त प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आचार्य प्रवर के चरणों में प्रणाम किया। संचालन नवीन पींचा ने किया। आभार ज्ञापन - शेखर दुगड़ ने किया।

धर्म संघ भावी नेता को पाकर पूर्ण निश्चिंत है

बीदासर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या, समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी मंजुयशा जी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के नवनिर्वाचित युवाचार्य प्रवर के मनोनयन के उपलक्ष्य में एक भव्य वर्धापना (बधाई) कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी श्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल संगान से हुआ। तत्पश्चात सामूहिक रूप से पार्श्वनाथ प्रभु की स्तुति की गई। साध्वी श्री जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा— 'हम सभी परम सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ धर्मसंघ जैसा अनुशासित, मर्यादित, संगठित और व्यवस्थित धर्मसंघ मिला। इसके आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु थे। उन्होंने अपनी त्याग-तपस्या से वीतराग प्रभु के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। आप्तवाणी उनके रोम-रोम में रमी हुई थी। उनके आचार-विचार में पूर्ण पवित्रता थी। उन्होंने संघ के भविष्य को उज्ज्वल व व्यवस्थित बनाए रखने हेतु कुछ मर्यादाएँ बनाईं। वे मौलिक मर्यादाएँ आज भी पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं, जिन पर यह संघ सतत गतिमान है।'

उन्होंने आगे कहा— 'इस संघ के यशस्वी आचार्यों ने अपनी तपस्या, साधना एवं श्रम की बूंदों से इसे सींचकर आगे बढ़ाया है। इसमें आचार्य का स्थान तो प्रमुख है ही, उन्हीं के द्वारा चयनित युवाचार्य का स्थान भी अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। उसी परंपरा का निर्वहन करते हुए वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने यथोचित समय पर अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुख्यमुनि श्री महावीर कुमार जी को युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया है, जिससे पूरे धर्मसंघ में अत्यंत खुशी का माहौल बन गया है। पूरा धर्मसंघ अपने भावी नेता को पाकर पूर्ण निश्चिंतता की अनुभूति कर रहा है।'

'युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी मारवाड़ के एक छोटे से गाँव फलौदी (फलसूँड) में जन्मे। लगभग 14 वर्ष की उम्र में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी से संयम स्वीकार किया। संयम की चादर ओढ़ते ही आप आत्माभिमुख बनकर अपनी साधना में लीन हो गए। इसके साथ गुरु-दृष्टि की अखंड आराधना करते हुए आगे बढ़े।

गुरु-द्वय के साये में अपनी विनम्रता, व्यवहार-कुशलता, मिलनसारिता, योग्यता, जागरूकता, कर्तव्यनिष्ठा, मितभाषिता तथा आचार-निष्ठा, गुरु-निष्ठा, आत्म-निष्ठा एवं अनुशासन-निष्ठा से आपने अपने गुरु के दिल में एक अमिट स्थान बना लिया। आपकी इन विलक्षण विशेषताओं एवं अविरल साधना को देखकर आचार्य प्रवर ने आपको योग्य समझा और तेरापंथ के सर्वोच्च पद—युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। युवाचार्य की आज हम सब मिलकर वर्धापना करते हैं और मंगल कामना करते हैं कि आचार्य श्री एवं युवाचार्य की यह जोड़ी युगों-युगों तक बनी रहे।' इस अवसर पर शासन श्री साध्वी कुलप्रभा जी, शासन श्री साध्वी रमावती जी, शासन साध्वी किरणमाला जी, साध्वी नयश्री जी एवं साध्वी जयंतयशा जी ने भी गीत, भाषण, कविता व मुक्तक द्वारा युवाचार्य प्रवर की अभ्यर्थना की।

तेरापंथ सभा के मंत्री नवनीत बोथरा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष चिराग बेगानी, महिला मंडल की अध्यक्षा मंजु बोथरा, आदि भाई-बहनों ने गीत, भाषण आदि द्वारा भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी इंदुप्रभा जी, साध्वी तीर्थप्रभा जी एवं साध्वी मानसप्रभा जी ने एक रोचक प्रस्तुति एवं मधुर गीत के माध्यम से अपने युवाचार्य प्रवर की भावभीनी अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी श्री चिन्मयप्रभा जी ने किया।

ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनने का सौभाग्य

गांधीनगर, बेंगलुरु।

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु के 301वें जन्मोत्सव एवं 269वें बोधि दिवस के उपलक्ष्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, गांधीनगर, बेंगलुरु के तत्वावधान में साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में भव्य धम्म जागरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर आचार्य भिक्षु के आदर्शों को आत्मसात करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद द्वारा प्रस्तुत प्रेरणादायी संगान 'प्रज्ञा के दीप जलेंगे' से हुआ, जिसने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत कर दिया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश बाबेल ने उपस्थित धर्मसभा का स्वागत किया। इसके पश्चात भजन मंडली प्रज्ञा संगीत सुधा, प्रेक्षा संगीत सुधा एवं श्रद्धा संगीत सुधा की भावपूर्ण प्रस्तुतियाँ देकर श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण बाल कलाकारों की प्रस्तुतियाँ रहीं। अपने मंगल उद्बोधन में साध्वी पावनप्रभाजी ने कहा कि आज का दिन इसलिए भी ऐतिहासिक और विशेष बन गया है क्योंकि युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने मुख्यमुनि महावीर कुमारजी को युवाचार्य के रूप में मनोनीत किया है। उन्होंने कहा कि आधुनिक तकनीक के माध्यम से दूर रहकर भी इस ऐतिहासिक एवं गौरवपूर्ण क्षण के साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। संचालन ललित सेठिया ने किया। सुभाष पोखरणा ने आभार ज्ञापित किया।

युवाचार्य प्रवर : संघ निष्ठा, आचार निष्ठा, विनम्रता के अनुपम धनी

कटिहार।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि प्रशांत कुमारजी मुनि कुमुद कुमारजी के सान्निध्य में युवाचार्य वर्धापना समारोह आयोजित हुआ जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा - कुम्हार मिट्टी को खोजता है। जिससे बर्तन को बना सकें।कलाकार पत्थर को खोजता है। जिससे प्रतिमा का निर्माण कर सके। किसान बीज को खोजता है। जिससे फसल पैदा कर सके। गुरु शिष्य की खोज में रहते हैं। योग्य शिष्य मिलें जिसे मैं अपना उत्तराधिकार दें सकूं। उपयुक्त तत्व के निर्माण में ज्यादा ध्यान दिया जाता है।

आचार्य श्री महाश्रमणजी ने भी अपनी दृष्टि से उपयुक्त का निर्माण करके उसे संघ के भाल पर प्रतिष्ठित कर दिया। युवाचार्य मनोनयन आचार्यों का एक अधिकार होता है।

तेरापंथ की परम्परा आचार्य अपने पीछे युवाचार्य मनोनीत करते है। इसके लिए किसी की सलाह लेने, परामर्श लेने की जरूरत नहीं होती है।स्व निर्णय एवं स्व चिंतन से कार्य किया जाता है।जिसको भी आचार्य ने यह पद दिया उसे सारा संघ सहर्ष स्वीकार करता है।छोटा या बड़ा, विद्वान या कम पढ़ा-लिखा जो भी होता है वो सबके लिए मान्य है। युवाचार्य महावीर कुमार जी प्रारम्भ से ही आचार्य श्री महाश्रमणजी की सन्निधि में रहें है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की भी विशेष कृपा प्राप्त की है।पात्र का योग्य होना बहुत आवश्यक है। संघनिष्ठा, आचार निष्ठा, विनम्रता, ज्ञान पिपासा,पापभीरुता से इन्होंने बहुत कुछ पाया है। गुरु की पारखी नजर ने परख कर धर्मसंघ को अनमोल रत्न प्रदान किया। मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा - आचार्य श्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष सम्पन्नता के अवसर को अति विशेष अवसर बना दिया आचार्य श्री महाश्रमणजी ने।

युवाचार्य महावीर कुमार जी में विनय, समर्पण एवं ज्ञान की त्रिवेणी है।सहजता, सरलता के साथ-साथ मधुर संगायक है। हंसमुख चेहरा सबके मन को आनंदित कर देता है। मुनि महावीर कुमार जी पद के योग्य बनें।

आचार्य श्री महाश्रमणजी ने संघ को शुभ भविष्य प्रदान कर दिया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष विमल बैंगाणी, नेपाल बिहार सभा अध्यक्ष विरेंद्र संचेती, तेरापंथ युवक परिषद कोषाध्यक्ष राहुल सुराणा आदि उपस्थित रहे।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

युवाचार्य मनोनयन : एक घोषणा नहीं, दूरदर्शी निर्माण यात्रा का प्रतिफल

● मुनि उदित कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ की पहचान केवल उसके अनुशासित संगठन से नही, बल्कि उसकी सुदृढ़ उत्तराधिकार परम्परा से भी होती है। इस परम्परा के केन्द्र आचार्य होते हैं, जो केवल वर्तमान का संचालन नही करते, अपितु भविष्य की दिशा भी निर्धारित करते है। यही कारण है कि तेरापंथ में युवाचार्य का मनोनयन किसी एक अवसर का निर्णय नही, बल्कि दीर्घकाल तक चलने वाली सूक्ष्म दृष्टि, सतत परीक्षण और सुनियोजित निर्माण-प्रक्रिया का स्वाभाविक परिणाम होता है।

जब धर्मसंघ के समक्ष युवाचार्य की घोषणा होती है, तब ऐसा प्रतीत होता है मानो उसी क्षण एक साधु को नया दायित्व प्राप्त हुआ हो। वस्तुतः वह घोषणा वर्षों से चल रही एक मौन साधना व परीक्षण का सार्वजनिक रूप होता है। जिस क्षण कोई संत आचार्य पद का दायित्व ग्रहण करता है, उसी क्षण उसके सामने धर्मसंघ के भविष्य का प्रश्न भी उपस्थित हो जाता है। तभी से वह ऐसे व्यक्तित्व की खोज और निर्माण में प्रवृत्त हो जाता है, जो समय आने पर धर्मसंघ की मर्यादाओं, आदर्शों और उत्तरदायित्वों को समर्थता के साथ आगे बढ़ा सके।

यह चयन किसी एक गुण या उपलब्धि पर आधारित नही होता। साधना की गहराई, संयम की दृढ़ता, मर्यादा के प्रति अटूट निष्ठा, सेवा-भाव, संगठन क्षमता, निर्णय-कौशल, विनम्रता, सहिष्णुता, अध्ययनशीलता तथा गुरुभक्ति- इन सभी आयामों का वर्षों तक शांत भाव से अवलोकन किया जाता है। वस्तुतः एक योग्य उत्तराधिकारी की खोज का अर्थ किसी व्यक्ति का चयन भर नही, बल्कि भावी आचार्य के व्यक्तित्व का क्रमिक निर्माण है।

युवाचार्य श्री महावीर का जीवन इस प्रक्रिया का सजीव उदाहरण है। बाल्यकाल से ही उन्हें युवाचार्य श्री महाश्रमणजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। आचार्य पद ग्रहण करने के पश्चात् आचार्य श्री महाश्रमणजी ने उन्हें क्रमशः अपने विविध उत्तरदायित्वों में सहभागी बनाना प्रारम्भ किया। यह केवल कार्य सौंपना नही था, बल्कि नेतृत्व का मौन प्रशिक्षण था। पूर्वांचल की यात्रा के दौरान वर्ष 2016 में उन्हें मुख्य मुनि का दायित्व प्रदान किया गया। यह नियुक्ति उनके संगठनात्मक अनुभव, उत्तरदायित्व-बोध और नेतृत्व क्षमता को विकसित करने का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हुई। लगभग एक दशक तक निरन्तर सेवा, साधना और अनुभव की इस यात्रा के उपरान्त वर्ष 2026 में लाडनूं की पावन धरा पर उन्हें युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। उस दिन जो घोषणा सुनाई दी, उसके पीछे वर्षों का विश्वास, परीक्षण और निर्माण मौन रूप से विद्यमान था।

युवाचार्य मनोनयन वस्तुतः गुरु के विश्वास की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। यह विश्वास किसी क्षणिक प्रभाव से नही, बल्कि दीर्घकालीन निकटता, सतत निरीक्षण और परिपक्व अनुभव से अर्जित होता है। एक आचार्य अपने उत्तराधिकारी को केवल दायित्व नही सौंपता, बल्कि उसे उस दायित्व के योग्य भी बनाता है। अवसर प्रदान करना, उत्तरदायित्वों में सहभागी बनाना, मार्गदर्शन देना और अनुभवों से परिपक्व करना- ये सभी उसी निर्माण-यात्रा के आवश्यक चरण हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि तेरापंथ में युवाचार्य का चयन नही, उसका निर्माण होता है।

युवाचार्य श्री महावीर के व्यक्तित्व में सहजता, विनम्रता, मर्यादानिष्ठा, अनुशासनप्रियता, अध्ययनशीलता, कार्य-कौशल और गुरुभक्ति का संतुलित समन्वय दृष्टिगोचर होता है। साधना की गंभीरता, सेवा भाव तथा सहजता उनके व्यक्तित्व को विशिष्ट बनाती है। यही गुण उन्हें धर्मसंघ के वर्तमान का विश्वसनीय सहयोगी और भविष्य का समर्थ नेतृत्व प्रदान करने वाला व्यक्तित्व सिद्ध करते हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ की यह परम्परा हमें यह बोध कराती है कि महान नेतृत्व घोषणाओं से नही, बल्कि दीर्घकालीन साधना, सतत प्रशिक्षण और गुरु की दूरदर्शी दृष्टि से निर्मित होता है। व्यवस्था में युवाचार्य का महत्त्व भी आचार्य के समान ही माना गया है। वे आचार्य के निकटतम सहयोगी, आचार्य-कल्प अथवा भावी आचार्य होते हैं। युवाचार्य के लिए यह काल अत्यन्त मूल्यवान होता है, क्योंकि यही उनके आचार्यत्व का वास्तविक प्रशिक्षण-काल है। जिन्हें ऐसा अवसर पर्याप्त रूप से प्राप्त होता है, वे भविष्य में अधिक परिपक्व नेतृत्व प्रदान कर पाते हैं।

वर्तमान युवाचार्य मनोनयन तेरापंथ की इसी आदर्श परम्परा का सशक्त उदाहरण है। यह केवल एक पद की घोषणा नही, बल्कि दूरदर्शी नेतृत्व, सुव्यवस्थित उत्तराधिकार व्यवस्था और धर्मसंघ के उज्ज्वल भविष्य के प्रति अटूट विश्वास का गरिमामय उद्घोष है।

हम सौ सौ बार बधाएं

● साध्वीश्री सुरेखा ●

मनोनयन का अभिनव उत्सव उजले छंद रचाए
हम मंगल दीप जलायें , लो सौ सौ बार बधाएं

महाप्राण श्री महाश्रमण ने करुणा रस से सींचा
दिव्य दृष्टि से परख-निरख भावी का नक्शा खींचा
कर कमलों से सिञ्चित कृति में सूरज चाँद उगाए।।1।।
लो सौ सौ बार

दो दो युगनायक पुरुषों ने तेरा रूप संवारा
गण के ताज बने गुरुभक्ति विनय समर्पण द्वारा
वर्धापन की मंगल बेला श्रद्धा थाल सजाएं।।2।।
लो सौ सौ बार

धरती अम्बर गीत सुनायें नई उमंगे मन में
श्रद्धा के हम स्वस्तिक आज उकेरे गण प्रांगण में
लगा रोशनी का मेला अलबेला दृश्य दिखाएं ।। 3।।
लो सौ सौ बार

सूरज चाँद सितारों की लग जाए तुम्हें उमरियां
भीगा मानस खुशियों से उमडी आनन्द बदरियां
भक्ति रस का बहता झरना क्या उपहार चढाए
लो सौ सौ बार

Humbly in the pious feet of Revered Yuwacharyapravar

● Sadhvi Dikshaprabha ●

Ecstatic is each speck of nature
Elated feels it's every creature
Blissful are the birds that fly
Colors of joy fill the Bhaikshaw sangh's sky.

Glorious feels the Phalsund land
Smiling over the success of it's sand
Grateful are the members of Kochar clan
Rejoicing over Mahashraman's future plan.

The radiant robe spotless and white
Awaiting the aspirations of the future bright.
That divine scene is difficult to write
Even a glance makes the heart dance in delight

On this auspicious day of thine
Infinite feelings flow but there's limitations to rhyme
Articulating the words in just one line.
Heartfelt Congratulations to the blessing of time
The sangh seeks for a lustrous shine.

तेरापंथ स्थापना दिवस 26 जुलाई पर विशेष

स्थापना दिवस मनायें, स्वामीजी की वीर वृत्ति को शीश नमायें

● मुनि कमल कुमार ●

स्थापना दिवस मनायें।
हो - स्वामीजी की वीर वृत्ति को शीश नमायें।।ध्रु।।
सिंह वृत्ति से जन्म सुहाया, माता ने सबको बतलाया।
हो - सिंह वृत्ति से बढ़े निरंतर पल पल ध्यायें।।१।।

नगर केलवा नींव लगाई, अंधेरी ओरी सुखदाई।
हो - उनके आदर्शों को हम नित स्मृति में लायें।।२।।

मेरुवत वे रहे अविचल, सजग साधना में वे प्रतिपल।
हो - अनगिन कष्ट सहे कैसे उनको गिनवायें।।३।।

आत्म साधना लक्ष्य सुपावन, वर्धमान थे उसमें क्षण-क्षण।
हो - उनकी क्षमता समता को निज हृदय विसमें।।४।।

तेरापंथ पंथ है प्यारा, असहायों का सबल सहारा।
हो - सदाचार विचार प्रगति का मंत्र बतायें।।५।।

आस्थावान सदा सुख पाता, मानव जीवन सफल बनाता।
हो - भक्त शंभुजी खर्पा की बलिहारी जायें।।६।।

याद कर रहे उनको जन जन, प्राणों से भी सुदृढ़ था प्रण।
हो - कमल अमल मन गुरुवर के गुण दिल से गायें।।७।।

तर्ज - राग री रेंस पिछानो

❖ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

— आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
10 अगस्त - 16 अगस्त 2026

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

छलक रहा भावों का दरिया

● शासनश्री साध्वी सुमनश्री ●

छलक रहा भावों का दरिया, वर्धापन का गीत सुनाए ।
सारे उत्सव एक हो गये, सौ सौ ये सावन लहराए।।

महाप्राण श्री महाश्रमण ने पल-पल करुणा रस से सींचा,
दिव्य दृष्टि से परख निरख कर भावी का नक्शा है खींचा,
कर कमलों से सिंचित कृति में अद्भुत सूरज चाँद उगाए।।

स्फटिक तुल्य यह आभामंडल देख-देख मन मुदित हुआ है,
संघ शिखर पर जैसे कोई स्वर्णिम सूरज उदित हुआ है,
सतरंगी किरणों ने अभिनव उजले उजले छंद रचाए।।

रोम-रोम सब आँख हो गई, साखी ज्यों कबीरा की,
पौर-पौर रस पूरित पाई खुशियां सकलधरा की,
यह बासंती मौसम मानो सुधाचांदनी रस बरसाए।।

पुण्य अर्चना के अवसर पर श्रद्धा का मैं अर्घ्य चढ़ाऊं,
संकल्पों की दिव्य ज्योति से पल-पल तुमसे ऊर्जा पाऊं।
प्रभो! प्रणत्त हम श्री चरणों में संकेतो पर कदम बढ़ाए ।।

मुख्यमुनि युवराज बने हैं, तेरापंथ सौभाग्य महान

● प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा ●

मुख्यमुनि युवराज बने हैं, तेरापंथ सौभाग्य महान।
यशश्वी भैक्षव में, जुड़ा है। श्रेयस्कर अभिधान।।

श्रीभिक्षुशासन में दीक्षित, मेधा तेरी अतिशायी।
हुए परीक्षित महाप्रज्ञ से, महाश्रमण गुरु वरदायी।।

संघभक्ति, आचार कुशलता -2 विनय समर्पण जीवनप्राण।
श्रेष्ठ श्रुताराधक पद पाया, गुरु किरपा पाई अभिराम।।
अपनी क्षमता को चमकाया, आगम का नवनीत ललाम।
ज्ञान चेतना जागृत तेरी-2 सफल हुए सारे अभियान।।

चादर धवल ओढ़ाई प्रभु ने, सीन निहारा मनहारी।
सक्षम कंधों भार संघ का, इतिहास रचा जय-जयकारी।।

संबोध प्रथम युवराज प्रवर का-2, कृतज्ञता का उत्तम अवदान।
गुरुवर महाश्रमण किरपा से, किया है शिखर पर आरोहण।।

उपहार संघ को दिया प्रभु ने, जय हो, जय हो महाश्रमण।
मंगलप्रज्ञा करे कामना-2 चरण रहे अविरल गतिमान।।

तर्ज - कलियुग बैठा मार कुण्डली

ओ गण के नव मधुमास!

● साध्वी अणिमाश्री ●

भिक्षु जन्म-दिवस पर प्रभु ने रचा नया इतिहास है।
युवाचार्य महावीर मुनिवर, गण के नव मधुमास है।

युवाचार्य महावीर मुनि तुम, भिक्षु की तस्वीर हो।
महाश्रमण प्रभु के पट्टधर तुम, गण की नव तकदीर हो।
अभिनंदन हम करते तेरा, कण-कण में उल्लास है।

योगक्षेम वर्ष में प्रभु ने, गण को दिया है नव उपहार।
योगक्षेम करो हम सबका, दो हमको नूतन आकार।
सर्वस्व समर्पण श्रीचरणों में, फैला नव्य प्रकाश है।

गण के महादिवाकर ने अब, शशिधर का है चयन किया।
सूर्य-चाँद को एकसाथ पा, हर्षित सबका आज हिया।
गुरु के सपने सफल करो तुम, हम सबका विश्वास है।

गण के नवम युवाचार्य की, तेजस्वी है साधना।
स्वस्तिक नए उकेरो गण में, प्राणवान हो शासना।
लिखो सृजन की नई ऋचाएं, मिला विशद आकाश है।

जय-मधवा-सी इस जोड़ी को, डाल रहे थुथकारा हम।
मिले युगल-शासना हमको, निरखें नव्य नजारा हम।
युग-युग जीओ हे युवराजा, अनुगूंजित हर श्वास है।

लय - कलियुग बैठा

युगल जोड़ी को समर्पित श्रद्धास्वर

● साध्वी रौनकप्रभा ●

सुगुरु को वंदन शत 2 बार
युवराजा की नियुक्ति कर गण को दिया उपहार
मिला भाग्य से भैक्षवशासन महाश्रमण के शास्ता ,
जिनकी सूझबूझ को अर्पित है जन-2 की आस्था,

महाश्रमण की अनुपम कृति का अभिनंदन बार हजार'
श्रुत रत्नों के तुम हो आकर, धीरज जैसे सागर
ज्ञान, ध्यान दरिया लहराए उपशम रस को पाकर
गाव - नगर - ढाणी - घाटी में गुजें जय -2 कार

गंगाजल सा पावन जीवन, भरता सबमें नव पुलकन
सहज सरलता मोहक मुद्रा, हरती है हर उलझन

गुरु चरणों में विनय समर्पण, तर जाए संसार
युगो-2 तक महाश्रमण की शाश्वत सन्निधि पाए।

युवाचार्य की नई सोच से नव उन्मेष जगाए।
शुभ भावों से आज बधाए पथ दर्शन सुखकार।।

वर्धापना आचार्य श्री महाश्रमणजी के गौरवशाली सक्सेसर

● डॉ. समणी ज्योतिप्रज्ञा ●

वर्धापना आचार्य श्री महाश्रमणजी के गौरवशाली सक्सेसर,
अभिनंदन! एकादशम अधिशास्ता के गौरवशाली सक्सेसर।

आठ संतानों की भाग्यवान छगनी देवी हैं मदर,
महिमामंडित हो गए हैं सवाईलाल जी फादर।

सुशीला, मधु, संगीता, धर्मिता हैं प्यारी सिस्टर,
मोहनजी, शांतिजी एल्डर व लोकेश हैं यंगर ब्रदर।

लंबा कद, मोहिनी मूरत, हो प्रभावक ओजस्वी स्पीकर,
होती है सभा सुधर्मा गुंजायमान, हे मेलोडियस सिंगर!

गौर वर्ण, उजली चादर, कूल-कूल हो बाइ नेचर,
तेरापंथ के ही नहीं, पूरी मानवता के हो वेलविशर।

आचार्य परंपरा में आप प्रथम हैं डॉक्टर,
जोशीली आवाज़ में श्रोताओं को पिलाते हो जिनवाणी का नेक्टर।

भक्ति में हनुमान व भारीमाल-से हो डेडिकेटर,
भाग्य व पुरुषार्थ के योग से बने हो ग्रेटर,

विलक्षण व्यक्तित्व पर पूरा,धर्मसंघ करता है सिग्नेचर।
एक्सटर्नल और इंटरनल अनुकूल रहे वेदर।
समण श्रेणी की क्वालिटी ओर क्वांटिटी अब बने और बेटर,
लंबे समय तक मिलती रहे गुरुवर की शेल्टर।

शुभं भूयात्, कल्याणं भूयात्, मंगलमय हो आपका फ्यूचर,
वंदना-अभिनंदन, महाश्रमणजी के गौरवशाली सक्सेसर!

चयन तुम्हारा, भाग्य खिला है आज हमारा

● डॉ. मुनि पुलकितकुमार ●

युवाचार्यवर! चयन तुम्हारा, भाग्य खिला है आज हमारा।
महाश्रमण के अंतेवासी, बने संघ के शुभ्र सितारा।।

मानवता के मुखर मसीहा, गुरु महाप्रज्ञ से पाई दीक्षा।
महाश्रमण के बन विश्वासी, सीखा रखना सदा तितिक्षा।।
बोधपाठ मिला शिष्यों को, पाया सबने सबल सहारा।।1।।

निर्मलतम चारित्र तुम्हारा अप्रमत्त है चर्या सारी।
गुरु इंगित को लक्ष्य मानकर अर्जुन की सी है इकतारी।।
सोते हो या भले जागते, संघ समाधी लक्ष्य तुम्हारा।।2।।

देते हैं हम अहो भाव से, अंतर मन से आज बधाई।
शिष्यों की हर गतिविधि में बस रहे तुम्हारी रहनुमाई।।
कदम बढ़ाओ संघ साथ है, अमर रहो जैसे ध्रुवतारा।।3।।

तेरापंथ-मेरा पंथ कार्यशाला का सफल समायोजन

पालनपुर।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में तेरापंथ सभा पालनपुर द्वारा ' तेरापंथ : मेरा पंथ' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला प्रशिक्षक सूरत उधना से समागत प्रवक्ता उपासक अर्जुन मेड़तवाल ने नमस्कार महामंत्र का मंगल उच्चारण करते हुए कार्यशाला का शुभारंभ करवाया। तत्पश्चात पालनपुर तेरापंथ महिला मंडल ने भिक्षु अष्टकम द्वारा मंगलाचरण किया।कोषाध्यक्ष भरत परीख ने स्वागत वक्तव्य एवम् प्रशिक्षक श्री का संक्षेप में परिचय दिया। कार्यशाला में मार्गदर्शन देते हुए प्रशिक्षक मेड़तवाल ने कहा आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष में हमारे आराध्य के प्रति समर्पण भाव प्रस्तुत करने के साथ तेरापंथ के दर्शन को समझने का सुअवसर हमें प्राप्त हो रहा है यह हमारा सौभाग्य है। इसके लिए हम पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञ हैं। उन्होंने कहा - आचार्य भिक्षु ने आगमों का गहन अध्ययन कर धर्म के शुद्ध स्वरूप को प्रस्तुत किया । रूढ़ मान्यताओं से ऊपर उठकर जैन दर्शन के सिद्धांतों की समझ दी।सम्यक्त्व का महत्व, तेरापंथ की स्थापना से लेकर साध्य साधन की मीमांसा, दान, दया, प्रतिमा पूजा के संदर्भ में स्वामीजी के दर्शन को विस्तार से समझाया। धर्म दान के तीन प्रकार- ज्ञान दान,संयति दान,अभयदान पर विस्तृत प्रकाश डाला एवं आचार विचार का उल्लेख किया। अर्जुनलालजी की समझाने की शैली प्रभावी एवं सरल भाषा में थी। अध्यक्ष विनोद भाई परीक ने कहा - तेरापंथ : मेरा पंथ कार्यशाला में प्रशिक्षक के रूप में उनका पुनः आना हुआ।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

युवाचार्य-अभिवंदना

● साध्वी मंगलप्रज्ञा ●

संघ के भव्य नव्य एवं दिव्य पारिजात युवाचार्य प्रवर! आज 'युवाचार्य प्रवर' यह नव्य संबोधन लिखकर मन हर्षोल्लास से पुलकित है, प्रमुदित है। युवाचार्य के रूप में आपश्री का वर्धापन करते हुए मेरे हृदय में आनन्द का अर्णव लहरा रहा है। आपश्री की मोहिनी मुरत अध्यात्म की परम पुनीत सूरत लग रही है।

कमनीय कान्तिधर युवाचार्य प्रवर! आप जैसे शौर्य, वीर्य, गाम्भीर्य युक्त व्यक्तित्व को युवराज पद पर प्रतिष्ठित कर गुरु महाश्रमण ने भिक्षुशासन के विकास की नई ऋचाएं लिख दी है। संघ के सौभाग्य को शतगुणित कर दिया है। गुरु महाश्रमण की पारखी नजरों ने संघ मुकुट पर एक दमकता - चमकता कोहिनूर हीरा स्थापित कर दिया है। आप सदैव संघ क्षितिज पर तेजस्विता के साथ तेजस्वी आभावलय से सम्पृकत होकर संघ आकाश को तेजोमय बनाते रहें, यह हमारी मंगलकामना है।

समर्पण के शिखरपुरुष युवाचार्य प्रवर! आपश्री के विनय का वैनतेय सर्वदा गारूड़ी गति से संघ को शिखरों पर चढ़ाता रहे। आपके समर्पण का सिंधु संघ- समन्दर में नए मोती निपजाता रहे। आपश्री की गुरुभक्ति, संघभक्ति तेरापंथ के नंदनवन को सुरभित करती रहे। आप वर्धमानता के शिखरों का आरोहण करते रहें। श्रेष्ठ श्रुताराधक युवाचार्य प्रवर! आपकी बहुश्रुतता सतत वृद्धिंगत रहती हुई संघ में श्रुतपावनी श्रुतधारा का वर्षण करती रहे। संघ के सभी सदस्य आपसे प्रेरणा प्राप्तकर ज्ञान-सरिता में अवगाहन करते रहें। विनय, समर्पण की आपसे प्रवाहित सुरसरिता हम सब साधु-साध्वियों में विनय एवं समर्पण के बीजों को पल्लवित, पुष्पित एवं फलवान बनाती रहे। आपके उज्वलतम भविष्य की अनन्त-अनन्त मंगलकामना।

काश! हम भी साक्षात वहां उपस्थित होकर इन अद्भुत क्षणों का अनुभव करते। किन्तु, दूरस्थ संचार माध्यम से जब वह स्वर्णिम नजारा देखा, ऐसा लगा कि मानो हम श्रीचरणों की ऊर्जामयी सन्निधि में पहुंच गए हैं। शिवांची-मालाणी भी आपश्री जैसे सपूत को पाकर अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रही है। यहां हर व्यक्ति का मन-मयूर उत्साह एवं उल्लास से नाच रहा है। इसका मैं साक्षात अनुभव कर रही हूँ। मैं यह भी अपना भाग्य मानती हूँ कि इस समय मैं सिवांची मालाणी क्षेत्र में हूँ। यहाँ पर आचार्य श्री एवं आपश्री के प्रति श्रद्धा के भावों को देखने का अवसर मिल रहा है। सैकड़ों-सैकड़ों लोग अभ्यर्थना हेतु सिवांची मालाणी से लाडनूं श्री चरणों में पहुँच रहे हैं। पूज्य युवाचार्य प्रवर मेरे भावों को शब्दों के माध्यम से ही आपश्री तक पहुँचा सकती हूँ, किन्तु ऐसा लग रहा है मेरी हर्षयुक्त इन भावनाओं के भार को ये शब्द वहन करने में समर्थ नहीं हैं। पुनः वन्दना! आपश्री की यशोगाथा निरंतर बढ़ती जाए। धर्मसंघ की श्रीवृद्धि करते रहें। आपश्री निरामय रहें। दीर्घकाल तक गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी की शुक्ल-सन्निधि में ही संघ की गौरववृद्धि करते रहें।

हृदयस्थ अनंत-अनंत मंगलकामनाएं!

अभिनंदनीय नवोदित युवाचार्यप्रवर

● डा. मुनि मदन कुमार ●

महामना परमपूज्य आचार्य श्री भिक्षु के त्रिशताब्दी वर्ष की परिसंपन्नता का परम पावन अवसर और अप्रतिम क्षण। धर्मसंघ की ओर से बोधि दिवस का आयोजन। परम पावन-महाकृपालु आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अपने युवाचार्य का मनोनयन किया। श्रद्धेय युवाचार्यप्रवर सबके अभिनंदनीय और आराध्य बन गये। भिक्षु-शासन की यह सुंदरतम व्यवस्था है।

हमारे जीवन में तीन बार युवाचार्य मनोनयन के प्रसंग आये हैं। सन् 1979 में परमपूज्य आचार्य श्री तुलसी ने युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ का, सन् 1997 में परमपूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने युवाचार्य श्री महाश्रमण का, और सन् 2026 में परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमण ने युवाचार्य श्री महावीर का मनोनयन किया। जब-जब ऐसे प्रसंग आये हैं, धर्मसंघ को अद्वितीय ऊंचाई मिली है तथा धर्मसंघ में आनन्द छाया है।

महामहिम आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन के 65 वें वर्ष में युवाचार्य मनोनयन किया और परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण ने भी अपने जीवन के 65 वें वर्ष में युवाचार्य मनोनयन किया। श्री तुलसी गणी की तरह श्री महाश्रमण गणी ने भी प्रायः गोपनीय ढंग से युवाचार्य श्री का मनोनयन किया।

परमाराराध्य आचार्य श्री तुलसी की तरह आचार्य श्री महाश्रमणजी ने भी अपने नव मनोनीत युवाचार्य प्रवर को अपने पट्ट पर आसीन किया। परमपावन आचार्य श्री तुलसी ने अपने युवाचार्य मनोनयन के लिये मर्यादा - महोत्सव का दिन चुना और परम कृपालु आचार्य श्री महाश्रमण ने अपने युवाचार्य मनोनयन के लिये आचार्य श्री भिक्षु का जन्म दिन (बोधि दिवस) चुना।

सन् 2001 में परमपूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के पावन सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव गंगाशहर में था। उन दिनों श्री सवाईचंदजी कोचर को गाते हुये सुना था, अच्छा और जोशीला गा रहे थे। तब यह मेरी (मुनि मदन कुमार) धारणा बनी कि पिता - पुत्र अच्छे संगायक है तथा कंठ कला मर्मज्ञ है।

तेरापंथ धर्मसंघ की संगीत कला अद्भुत और विलक्षण रही है। परमपूज्य आचार्य श्री भिक्षु स्वामी, जयाचार्य, कालुगणी और तुलसी गणी का तो कहना ही क्या? वे सचमुच संगीत सम्राट थे और तानसेन को भी मात करने वाले थे। हमारा विश्वास है कि युवाचार्य प्रवर भी संगीत के क्षेत्र में कीर्तिमान बना सकेंगे। आपका तेरपंथ स्थापना को दिवस पर उद्बोधन सुना तब लगा कि आप सचमुच प्रज्ञा पुरुष हैं और प्रज्ञा के पुरस्कर्त्ता बनेंगे। आप भाग्यशाली हैं, क्षयोपशम प्रबल है और विनम्रता के प्रतीक पुरुष हैं।

सिवाणची मालाणी की पावन धरा के फलसुण्ड गांव के श्री सवाईचंदजी कोचर और श्रीमती छगनी देवी कोचर के गृहांगन में एक नररत्न पैदा हुआ और वह धर्मसंघ का भाल बन गया।

मेरे अनन्य सहयोगी मुनि संयम कुमारजी और मुनि कल्प कुमारजी बोले - काश! हम भी वहां होते तो योगक्षेम - वर्ष का आनंद लेते और युवाचार्य मनोनयन का अद्भुत नजारा साक्षात् देख पाते। ऐसी उत्तम भावना भी निर्जरामूलक होती है। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर और युवाचार्यप्रवर को शत - शत बधाई तथा अन्तःकरण की कामना है कि यह जोड़ी अमर रहे। एक पद्य के साथ इस महायुगल की अभिवंदना कर रहा हूँ –

सिद्ध पुरुष की सिद्ध वाणी, सफल हुई साकार।
महाश्रमण महावीर की जोड़ी, युग युग जय जयकार ।।

युवराजा! तुम्हें मेरा प्रणाम...

● मुनि कल्प कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ में नित्य नवीनता के दर्शन होते हैं। विशाल धर्मसंघ है और श्रेष्ठ नेतृत्व है। तेरापंथ की गुरु-परंपरा बहुत प्राणवान है। फिर शिष्य-परंपरा शक्तिशाली क्यों नहीं होगी? परमपूज्य अष्टमाचार्य श्री कालूगणी ने शिष्यों को उत्प्रेरित करते हुए कहा था - शिष्य समुदाय को आचार्य पद की अर्हता का विकास करना चाहिये। हमारा धर्मसंघ सचमुच विकासशील है। इसका सारा श्रेय कुशल नेतृत्व को जाता है।

हमने अपनी आंखों से निहारा कि परमपूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अपने सुशिष्य को युवाचार्य पद पर आसीन किया! गौर वर्ण, भव्य ललाट, मनोहर मुद्रा और कल्याण भावना से ओतःप्रोत एक मनस्वी सन्त ने पदारोहण किया! सद्भावना का अंबार लग गया और धर्मसंघ की तेजस्विता में चार चांद लग गये। ऐसे प्रसंग अन्तःकरण को आलोकित कर देते हैं तथा शुभ भविष्य का निर्माण कर देते हैं। मुझे श्रद्धेय युवाचार्य प्रवर का बहुत सान्निध्य मिला है तथा श्रुताराधना में अपूर्व सहयोग मिला है। मैं (मुनि कल्प कुमार) उनके मुख्य मुनि काल में प्रथम बेच का मुमुक्षु बनने का सौभाग्य पा सका, इसका मुझे बड़ा हर्षोल्लास है। मेरे विद्या-विकास में आपका बहुत श्रम और आशीर्वाद रहा है। मेरे अध्ययन में आपकी श्रेष्ठ भूमिका कही जा सकती है। उनकी पावन सन्निधि में मुझे पंच सूत्रम, शान्त सुधारस, सिन्दूर प्रकर, जैन तत्त्व प्रवेश, संस्कृत चौबीसी, कालू तत्त्व शतक आदि अनेक चीजें सीखने का सौभाग्य मिला तथा साधु प्रतिक्रमण भी मैंने आपश्री के पास सीखा था। आपकी यह सद्प्रेरणा मेरे कानों में गूंज रही है कि तुम्हें एक श्रेष्ठ अध्ययनशील साधु बनना है। उनकी यह आशिष मेरे भीतर पल रही और फल रही है। पूज्यवरों की महान अनुकंप और अनुग्रह से मुझे अशेष मुनि मदन कुमारजी स्वामी का मार्ग दर्शन मिल रहा है जो मेरे जीवन को संवार रहा है तथा ज्ञान को हृद्गत कर रहा है। गुरु-कृपा से दुर्लभ संयोग मिल जाते हैं और आध्यात्मिक विकास के द्वार खुल जाते हैं। अपने भीतर विनम्रता, सहिष्णुता और तुलना के विकास की अहर्निश मंगल भावना करता हूँ।

सिद्धपुरुष ने सर्वसिद्धा -2 त्रयोदशी का मान बढाया

● साध्वी संयमलता ●

सिद्धपुरुष ने सर्वसिद्धा -2 त्रयोदशी का मान बढाया,
ज्योतिचरण की महर नजर ने गण को युवाचार्य बकसाया !

है सौभाग्यशाली ये शासन-2 मिले एक से बढ़ गणमाली-2
गुरुवर महाश्रमण की महिमा जग मे अद्भुत और निराली,

भिक्षु जन्म त्रिशति सम्पूर्ति -2 पर शासन ने आश्वासन पाया,
ज्योतिचरण की महर नजर ने गण को युवाचार्य बकसाया!

समझ न आए किसे बधाऊ कृति को या फिर कलाकार को-2
समाधान पाया भीतर से रही देख बाहरी आकार को

है अद्वैत गुरु मे शिष्य -2 और शिष्य में गुरु समाया
ज्योतिचरण की महर नजर ने गण को युवाचार्य बकसाया

आज दिशाएं विहँस रही है और हवाएँ गाती गीत-2
प्रकृति का कण-2 करता है युवाचार्य को वर्धापित

हम भी करती है वर्धापन -२ चयन गुरु का अति मनभाया
ज्योतिचरण की महर नजर ने गण को युवाचार्य बकसाया

योगक्षेम वर्ष में बांटा गुरुवर तुमने अमृत जी भर -2
पीया अंजुरी भर-2 उन ने जिनका था प्रभु भाग्य सिकन्दर

भाग्य नियंता ने कितनो का-2 निज कर से है भाग्य बनाया
लम्बी सुखमय सन्निधि पाने विभुवर मोरा मन ललचाया
शुभ अवसर पर वर दो विभुवर, जब आयें पाये सुखसाया'

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
10 अगस्त - 16 अगस्त 2026

चातुर्मास मंगल प्रवेश का आयोजन

वाशी नवी मुंबई।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या 'शासन श्री' साध्वी शिवमालाजी साध्वी अमितरेखाजी, साध्वी अर्हमप्रभाजी का प्रवेश हुआ।सभा वाशी अध्यक्ष पंकज चंडालिया भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन वाशी अध्यक्ष कमलेश बोहरा अणुव्रत ट्रस्ट अध्यक्ष लादूलाल, श्रीमाल भारत जैन तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष ललित चंडालिया तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष स्वीटी खाँटेड द्वारा किया गया।

साध्वी अमितरेखाजी एवं साध्वी अर्हमप्रभाजी ने वक्तव्य एवं गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सुरेंद्र कोठारी मुंबई श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा मुंबई अध्यक्ष ख्यालीलाल तातेड़ आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ सभा मुंबई के सहमंत्री सुशील मेड़तवाल चेतनजी कोठारी ने किया। आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा वाशी कोषाध्यक्ष विकास मेहता ने किया।

पृष्ठ 2 का शेष

बेटियां जहां जाएं...

'बेटी तेरापंथ की' मंचनीय उपक्रम व वर्धापना:

ससुराल से पीहर पहुंचीं बेटियों, दामादों और बच्चों ने संगीतमय प्रस्तुतियों से युवाचार्यश्री को वर्धापित किया। उपक्रम के दौरान 'बेटी तेरापंथ की' संयोजिका कुमुद कच्छारा तथा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष महेंद्र नाहटा ने अपने विचार रखे।

'धर्म उत्कृष्ट मंगल है': आचार्यश्री का दूसरा पावन बोध: पूज्य प्रवर ने बेटियों को नए घर को स्वर्ग बनाने और बच्चों में नैतिक-आध्यात्मिक संस्कार सिंचन का संदेश दिया।

१.धर्म की सर्वोच्चता : धर्म उत्कृष्ट मंगल है, जिसके तीन मुख्य प्रकार हैं—अहिंसा, संयम और तप। जिसका मन धर्म में रमा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

पद, पैसा और प्रतिष्ठा के मुकाबले धर्म रूपी संपत्ति मिलना सबसे विशेष बात है।

२.युवाचार्यश्री का परिचय व संस्कार निर्माण: आचार्यश्री ने उपस्थित जनसमूह को नवनियुक्त युवाचार्यश्री महावीर कुमार जी का परिचय कराया। पूज्य प्रवर ने प्रेरणा दी कि इस भौतिक युग में बच्चों में अहिंसा, नैतिकता और अध्यात्म के संस्कार आएं, जिससे वे तनाव से मुक्त रह सकें।

३.बेटियों को पावन संदेश: बेटियां जहां भी जाएं, अपने व्यवहार और धर्म-संस्कारों से उस घर को 'स्वर्ग' बना दें। परिवार में शांतिपूर्ण माहौल रहे और यह दो दिवसीय सम्मेलन पूरी निष्पत्ति के साथ संपन्न हो।

पृष्ठ 19 का शेष

सेवा, श्रम और ज्ञान...

युवाचार्य महावीर को स्वाध्याय का जितना समय मिलता जाए, उससे ज्ञान और पुष्ट हो सकता है। वे पहले मुख्यमुनि के रूप में संघीय कार्यों और संदेश लेखन से जुड़े रहे हैं, जो अब नैष्कर्म्य और ऊर्ध्वारोहण की स्थिति में आ गया है।

३. मंगल आशीर्वाद: द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुसार युवाचार्य जी सदैव तैयार रहें। उनकी मानसिक समाधि, खूब सक्रियता, मनोबल और विनम्रता बनी रहे। वे स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए स्वाध्याय, व्याख्यान अभ्यास और शासन-प्रशासन के कार्यों पर दृष्टि रखें तथा निरंतर आगे बढ़ते और फलते-फूलते रहें।

गुरु चरणों में युवाचार्य श्री की विनयपूर्ण अभिव्यक्ति:

युवाचार्य श्री ने पूज्य गुरुदेव के प्रति पूर्ण समर्पण और विनय भाव व्यक्त किया।

समर्पण भाव: 'मैं सदैव पूज्य गुरुदेव के चरणों व शरण में हूँ। आचार्य प्रवर का मंगल आशीर्वाद, मंगल साया और मंगल कृपा दृष्टि सदैव मिलती रहे। गुरुदेव ने जो प्रेरणाएं दी हैं और साधु-साध्वियों ने जो बातें निवेदित की हैं, उन सभी गुणों से मैं संपन्न बन सकूँ, यही मेरी मंगल कामना है।'

चारित्रात्माओं एवं संस्थाओं द्वारा भावभरी वर्धापना:

चतुर्विध धर्मसंघ, साध्वीवृंद और मुनिवृंद ने गीतों व विचारों से युवाचार्य श्री का अभिवंदन किया।

१.साध्वीवर्या जी की अभिव्यक्ति: उन्होंने कहा कि परम पूज्य आचार्य प्रवर ने मुख्यमुनि श्री महावीर कुमार जी को युवाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया है। गुरु आशीर्वाद से अभिभूत युवाचार्य प्रवर की वर्धापना करते हुए उन्होंने सुमधुर गीत का संगान किया।

२.साध्वीवृंद के वक्तव्य: शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी (लाडनूं), शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी, शासन श्री साध्वी जिनप्रभा जी एवं साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

३.गीत संगान व प्रस्तुतियां: मुनिवृंद, मुमुक्षु बहनों तथा अनेकानेक मुनि प्रवर, साध्वी व समणी वृंद ने गीतों के माध्यम से वर्धापना दी।

४. संसारपक्षीय परिवार : युवाचार्य श्री के संसार पक्षीय भाई लोकेश कोचर ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

'तेरापंथ टाइम्स' का लोकार्पण :

अभातेयुप के पदाधिकारियों द्वारा पूज्य आचार्य श्री के समक्ष भिक्षु त्रिजन्मशताब्दी पूर्णाहुति अंतर्गत 'तेरापंथ टाइम्स' के विशेषांक का भावपूर्ण लोकार्पण किया गया।

ज्ञान रूपी जल के लिए...

२. संस्थाओं एवं चारित्रात्माओं द्वारा अभिवंदना : शासन गौरव साध्वी राजीमती जी, अनेक मुनिवृंद, साध्वीवृंद, समणीवृंद तथा युवाचार्यश्री के संसारपक्षीय परिवार (सुमेर कोचर व परिवार) ने गीतों व ओजस्वी विचारों से वर्धापना दी।

३.केंद्रीय संस्थाओं की उपस्थिति: जैन विश्व भारती (अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़), जेवीबीआई (कुलपति श्री बच्छराज दूगड़), अणुविभा (अध्यक्ष, प्रताप दूगड़), अमृतवाणी, सिरियारी ट्रस्ट, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान और अणुव्रत न्यास सहित अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं के पदाधिकारियों ने युवाचार्यश्री को भावभरी वर्धापना अर्पित की।

बोलती किताब

अमूर्त चिंतन

आत्मबोध, अनुप्रेक्षा और आंतरिक जागरण का पथ

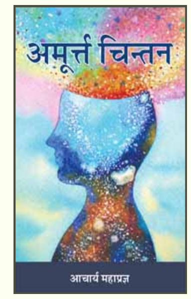

अमूर्त चिंतन आचार्य महाप्रज्ञ की ऐसी प्रेरणादायी कृति है, जो पाठक को इन्द्रियबोध की सीमाओं से आगे बढ़कर आत्मचिंतन और आध्यात्मिक जागृति की दिशा में अग्रसर करती है। यह पुस्तक बताती है कि जीवन का वास्तविक विकास केवल बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि भीतर की चेतना, विवेक और आत्मानुभूति से संभव होता है। सरल भाषा और गहन चिंतन के माध्यम से प्रस्तुत यह ग्रंथ साधना को जीवन का व्यावहारिक आधार बनाता है।

इस पुस्तक में अनुप्रेक्षा, भावना और ध्यान को व्यक्तित्व-परिवर्तन के प्रभावी साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आचार्य महाप्रज्ञ स्पष्ट करते हैं कि सकारात्मक चिंतन, सतत अभ्यास और आत्मनिरीक्षण के द्वारा मनुष्य अपनी आदतों, विचारों और जीवन-दृष्टि में सार्थक परिवर्तन ला सकता है। यह कृति केवल सिद्धांतों की चर्चा नहीं करती, बल्कि उन्हें दैनिक जीवन में अपनाने की प्रेरणा भी देती है।

अमूर्त चिंतन अनित्यता, आत्मबोध और वैराग्य जैसे गहन विषयों को अत्यंत सहज और जीवनोपयोगी शैली में समझाती है। यह पुस्तक बताती है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है और इस सत्य को स्वीकार कर ही मनुष्य आसक्ति, भय और मानसिक अशांति से मुक्त हो सकता है। आत्मचिंतन के माध्यम से विकसित होने वाली यह दृष्टि व्यक्ति को संतुलित, शांत और विवेकशील जीवन की ओर ले जाती है।

यह कृति साधकों, अध्येताओं और आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए एक अमूल्य मार्गदर्शक है। पुस्तक का प्रत्येक विचार आत्मविकास, संयम, नैतिकता और आंतरिक शुद्धि की प्रेरणा देता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में स्थायी शांति, सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मिक उन्नति की खोज में है, उसके लिए अमूर्त चिंतन एक सार्थक एवं प्रेरणास्पद ग्रंथ सिद्ध होती है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

दिल्ली मिशन दृष्टि नेत्र जांच शिविर का आयोजन

नई दिल्ली।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) दिल्ली ने ASG Eye Hospital, Venus Eye Hospital, Centre for Sight और Sharp Sight Eye Hospitals के सहयोग से मिशन दृष्टि नामक विशाल नेत्र जांच शिविर का सफल आयोजन किया।

इस शिविर का उद्देश्य स्कूली बच्चों में नेत्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देना और समय पर दृष्टि जांच सुनिश्चित करना था। यह शिविर निम्नलिखित विद्यालयों में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत _नवकार मंत्र_ के जाप के साथ हुई, जिसमें शिविर की सफलता के लिए आशीर्वाद लिया गया।

मिशन दृष्टि_ बच्चों में नेत्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने और समय पर दृष्टि संबंधी समस्याओं का पता लगाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। VP पंची जैन, VP प्रभात खातेर, VP राहुल जैन आदि का विशेष सहयोग रहा।

युगप्रधान महाश्रमण की दृष्टि
तेरापंथ का भाग्योदय
युवाचार्य महावीर की नियुक्ति

लाडनूं की पावन धरा पर गूंजे जय-जयकार,
युगप्रधान का नवीन चिंतन, मंगलमय विस्तार।
साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, चारों तीर्थ हर्षाए,
युवाचार्य की नियुक्ति से संघ-आंगन मंगल गाए।
गुरुवर की दूरदृष्टि का युग-युग रहे उपकार,
कृतज्ञ नमन अर्पित करे जयकार परिवार...

: श्रद्धाप्रणत :
श्रीमती लक्ष्मीबेन कुंवरजी भाई परिख परिवार
(मावसरी-सूरत, गुजरात)
नरेश, प्रकाश, चिंतन, कवित, पार्थ, रुचित
जयकार परिवार

JAYKAR
"Rough To Polish" – Under One Roof

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 अगस्त - 16 अगस्त 2026
हे प्रभो ! यह तेरापंथ

: श्रद्धाप्रणत :

सुभाष हर्षल नाहर
छत्रपति संभाजी नगर - बैंगलोर

नाहर्स ग्रुप इंडिया
छत्रपति संभाजी नगर - बैंगलोर - होसूर - पुणे

SAGNAHARS AUTOTECH INDIA PVT LTD
LAXMI METAL PRESSING WORK PVT LTD
NAHARS ENGINEERING INDIA PVT LIMITED
LUMINAZ SAFETY GLASS PVT LTD

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 अगस्त - 16 अगस्त 2026

सेवा, श्रम और ज्ञान दान भी तपस्या का उत्कृष्ट रूप : आचार्यश्री महाश्रमण

युवाचार्य वर्धापना समारोह के द्वितीय दिवस पर पूज्य प्रवर ने युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी को दी मंगल आशीष

लाडनूं।
31 जुलाई, 2026

जैन विश्व भारती में आयोजित दो दिवसीय समारोह के समापन तीर्थंकर के प्रतिनिधि, युगप्रधान, पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने उत्तराध्ययणाणि आगम से पावन देशना दी।

'तप से तापस होता है':

उत्तराध्ययणाणि आगम से पावन देशना पूज्य आचार्यश्री ने जीवन की भौतिक-आध्यात्मिक उपलब्धियों, भाग्य के भेदों और तप के गूढ़ रहस्य का विस्तृत विश्लेषण किया।

१. साधना का मूल सूत्र : समता से आदमी श्रमण (समन) बनता है, ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण बनता है, ज्ञान से मुनि और तप से तापस बनता है। जीवन में तप की तेजस्विता होना भी एक महान उपलब्धि है।

कर्म क्षयोपशम और तीन मुख्य युग्मः

विद्वत्ता और बुद्धिमत्ताः मनुष्य में बौद्धिक क्षमता, विद्वत्ता और तीक्ष्ण बुद्धि का होना ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से संबद्ध होता है।

सत्ता और वर्चस्विता : व्यक्ति में तेज और पुण्य का योग होने पर उसे सत्ता, वर्चस्विता, मान-सम्मान और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

धनिता और स्वस्थता : गृहस्थ जीवन में धनवान होना और साधु हो या गृहस्थ—शारीरिक स्वास्थ्य की अनुकूलता पाना, यह सब पुण्य के उदय की स्थितियां हैं।

> सदैव गुरुदेव के चरणों की शरण में रहकर आगे बढ़ना ही लक्ष्य
> –युवाचार्य श्री महावीर कुमार

मूर्त और अमूर्त भाग्य का चिंतनः

१. मूर्त भाग्य : यह कर्मों के उदय भाव और पुण्य के योग से जुड़ा होता है, जो भौतिक अनुकूलताएं देता है।

२. अमूर्त भाग्य : यह औपशमिक व क्षायोपशमिक भाव से प्राप्त होता है, जो आत्मा का वास्तविक और आध्यात्मिक विकास करता है।

तप का व्यापक और व्यावहारिक स्वरूपः

बाह्य तप का अपना प्रभाव होता है और साधु स्वयं को संयम व तप से भावित करता है। केवल उपवास आदि ही तप नहीं हैं, बल्कि सेवा करना, श्रम करना, साधना करना और किसी को ज्ञान का दान देना भी तपस्या का ही उत्कृष्ट रूप है। क्षेत्र और काल के अनुसार विवेकपूर्वक तप का चयन करना चाहिए।

युवाचार्य श्री के प्रति पूज्य प्रवर की मंगल भावनाएं :

सहवर्ती के रूप में युवाचार्य श्री की निष्ठा और क्षमताओं की आचार्य श्री ने खुलकर सराहना की।

१.सेवा व कार्य क्षमताः युवाचार्य महावीर ने सेवा का कार्य भी किया है। हर अग्रणी को महावीर जैसा सहवर्ती मिल जाना भाग्य की बात होती है। श्रम करना भी एक प्रकार का तप है और शासन-प्रशासन का कार्य भी सेवा का ही रूप है, जिससे साध्वी प्रमुखा व साध्वीवर्या जी भी जुड़ी हुई हैं।

२. गुरु-छाया और दायित्व : आचार्य के बाद युवाचार्य होते हैं। गुरु की छाया व सानिध्य में रहना सौभाग्य की बात है।

(शेष पेज 16 पर)

नवनियुक्त युवाचार्यश्री महावीर कुमार जी के वर्धापना समारोह का भव्य आगाज़

ज्ञान रूपी जल के लिए 'प्रतिभा' ही सबसे अनूठा पात्र है : आचार्यश्री महाश्रमण

चारित्रात्माओं और केंद्रीय संस्थाओं ने अर्पित की वर्धापना

लाडनूं।
30 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के नवनियुक्त युवाचार्यश्री महावीर कुमार जी के वर्धापना समारोह का दो दिवसीय प्रथम चरण अत्यंत गरिमामय और भव्य वातावरण में संपन्न हुआ। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी एवं नवनियुक्त युवाचार्यश्री महावीर कुमार जी के एक साथ मंचारूढ़ होते ही विशाल जनमेदिनी और चारित्रात्माओं के जयघोष से संपूर्ण परिसर गुंजायमान हो उठा।

'ज्ञान से मुनि होता है':

उत्तरज्झयणाणि आगम से पावन देशना

१.ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशमः महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'ज्ञान से मुनि होता है' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए फरमाया कि मोक्ष प्राप्ति का मुख्य साधन सम्यक् ज्ञान है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से ही ज्ञान का प्रकाश फैलता है। साधु-साध्वियों और श्रावकों को जब भी समय मिले, स्वाध्याय, मनन और अनुप्रेक्षा में गहराई से पैठना चाहिए।

> सहजता, प्रतिभा और कड़ा संयम... यही है युवाचार्यश्री की असली पहचान!
> –साध्वी प्रमुखाश्री

२. प्रतिभा-प्रज्ञा और स्वाध्याय का महत्त्व : पूज्य प्रवर ने उदाहरण देते हुए समझाया कि जैसे जल के लिए बर्तन चाहिए, वैसे ही ज्ञान रूपी जल को धारण करने के लिए 'प्रतिभा-प्रज्ञा' रूपी पात्र आवश्यक है। आगम और महापुरुषों के विचार सुनने-पढ़ने से आत्मा में शुभ भावों का प्रकंपन और विनय की साधना का विकास होता है।

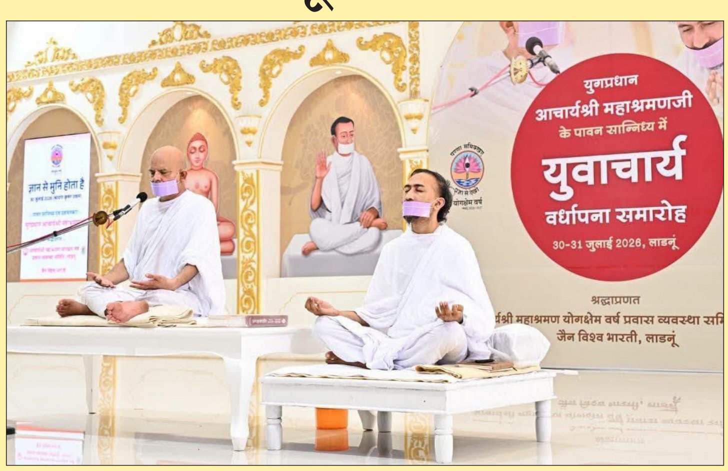

युवाचार्यश्री की ज्ञान-साधना और क्षमताओं की सराहनाः

पूज्य आचार्यश्री ने युवाचार्यश्री महावीर कुमार जी की ज्ञान-साधना की सराहना करते हुए फरमाया कि युवाचार्य जी वर्षों से श्रुत की आराधना से जुड़े रहे हैं। पीएचडी, एम.ए. और संघीय पाठ्यक्रमों के साथ वे व्यवस्था पक्ष से भी कुशलता से जुड़े रहे हैं। 'श्रेष्ठ श्रुताधारक' की उपाधि से अलंकृत युवाचार्यश्री की श्रुत, शरीर, वचन और आचार संपदा निरंतर पुष्ट और समृद्ध होती रहे।

साध्वी प्रमुखा जी व गणमान्य संस्थाओं ने दी भावभीनी वर्धापनाः

१. साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी : साध्वी प्रमुखा श्री जी ने प्रथम आचार्यश्री भिक्षु एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि युवाचार्यश्री सहजता, निश्चलता, प्रतिभा और आगम-निष्ठा के धनी हैं। उनकी विनम्रता और संयम-निष्ठा सदैव वृद्धिगत होती रहे। (शेष पेज 16 पर)

मैं निश्चिंत हो गया.....

साध्वी प्रमुखा श्री जी ने एक बहुत ही मार्मिक प्रसंग साझा किया, जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ जी ने युवाचार्य महाश्रमण जी की नियुक्ति के समय कहा था, 'अब महाश्रमण युवाचार्य बन गए, मैं निश्चिंत हो गया, मैं हल्का हो गया।' इसी संदर्भ में उन्होंने युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के लिए भी मंगल कामना की कि एक दिन आचार्य प्रवर भी ऐसा ही अनुभव करें।

साधना का महाकुंभ शुरू... मोह छोड़ धर्म में जुट जाइए ! : आचार्यश्री महाश्रमण

चातुर्मास का आगाज़: पूज्य प्रवर का श्रावकों को आह्वान—कम से कम दो महीने रात्रि भोजन और जमीकंद का पूर्ण त्याग करें

लाडनूं।
28 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी (अनुशासन पर्व) के पावन अवसर पर उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से 'अल्पोपधित्व' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को अमूल्य पाथेय प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने कहा कि साधु जीवन में तेरह नियम (५ महाव्रत, ५ समितियां व ३ गुप्तियां) आराधनीय होते हैं।

अल्पोपधित्वः खुद को 'मिनिमाइज' करने का साधना सूत्रः

१.उपकरणों का सीमित उपयोगः पूज्य आचार्यश्री ने कहा कि साधु-साध्वियों के पास दो प्रकार के उपकरण होते हैं—स्वयं की निश्रित (पछेवड़ी, चोलपट्टा, रजोहरण आदि) और प्रतिहार्य (कुंडा, बाल्टी आदि)। चातुर्मास प्रारंभ होते ही साधु-साध्वियों और अग्रणियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वस्त्र, पात्र और थैलों का अनावश्यक संग्रह न हो।

> जरूरतों का बोझ जितना हल्का होगा... आत्मा की उड़ान उतनी ही ऊंची होगी।
> –आचार्यश्री महाश्रमण

२.लघुभूत विहारः जैसे हवा हल्की होकर बहती है, वैसे ही साधु को भी विहार में हल्का (लघुभूत) रहना चाहिए। परिग्रह और संग्रह कम होने से प्रतिलेखन आसान होता है और जीव-हिंसा की संभावना खत्म होती है। पदार्थों से आकर्षण हटाकर आत्मा से जुड़ना ही सच्ची साधना है।

चातुर्मास की महिमा और नियम-संयम का आह्वानः

१. विहार पर विराम और साधना का अवसर : आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी के साथ ही चातुर्मास काल प्रारंभ होता है और विहार का ताला बंद हो जाता है। एक स्थान पर स्थिरता रहने से साधु-साध्वियों को विश्राम, ध्यान और लंबी तपस्या का अवसर मिलता है, वहीं श्रावकों को भी दर्शन, सेवा और शिविर-कार्यशालाओं का लाभ मिलता है।

२. श्रावकों के लिए तप-त्याग के निर्देश : पूज्य प्रवर ने गृहस्थों को चातुर्मास में यथाशक्ति तपस्या, नवकारसी, पोरसी, एकासन करने और कम से कम दो माह रात्रि भोजन का पूर्ण त्याग तथा जमीकंद का वर्जन करने की प्रेरणा दी।

३. स्थापना दिवस और आषाढ़ी पूनम : आचार्यश्री ने स्मरण कराया कि कल आषाढ़ी पूर्णिमा तेरापंथ स्थापना दिवस है, जो स्वामी भिक्षु की नव्य-भव्य दीक्षा का ऐतिहासिक दिन है।

हाजरी वाचन व त्रिपदी वंदनाः अनुशासन पर्व के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने हाजरी का वाचन करते हुए विविध प्रेरणाएं दीं।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

सम्पादकीय

संपादकीय कलम से...

तेरापंथ स्थापना दिवस केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं, बल्कि उस दिव्य क्रांति का स्मरण है जिसने शिथिलाचार के अंधकार में अनुशासन, मर्यादा और साधना का उज्ज्वल दीप प्रज्वलित किया।

लगभग ढाई शताब्दी पूर्व पूज्य आचार्य श्री भिक्षु ने जब तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की, तब उन्होंने केवल एक नया संघ नहीं बनाया; उन्होंने ऐसा आध्यात्मिक आदर्श प्रस्तुत किया, जिसकी आत्मा थी—'एक गुरु, एक विधान।'

यही वह अमर सूत्र है जिसने तेरापंथ को विश्व के सर्वाधिक अनुशासित, संगठित और मर्यादित धर्मसंघ के रूप में प्रतिष्ठित किया।

किन्तु स्थापना दिवस के इस पावन अवसर पर 'तेरापंथ टाइम्स' प्रत्येक तेरापंथी के अंतर्मन से कुछ प्रश्न करना चाहता है—

1. क्या 'एक गुरु आज्ञा' का सिद्धांत हमारे लिए केवल जयघोष का विषय बनकर रह गया है, या वास्तव में गुरु–आज्ञा हमारे विचारों, निर्णयों और जीवन का सर्वोच्च मार्गदर्शन है?

2. क्या 'एक विधान' हमारे आचरण में भी उतना ही दृढ़ है, जितना हमारे शब्दों में? अथवा कहीं सुविधा, स्वार्थ और व्यक्तिगत आग्रह मर्यादा से ऊपर तो नहीं होने लगे हैं?

3. क्या आज की युवा पीढ़ी उस मर्यादा–पत्र के महत्व को समझती है, जिसे आचार्य भिक्षु ने अपने तप, त्याग और अदम्य अनुशासन से गढ़ा था?

याद रखिए—तेरापंथ केवल एक धार्मिक संगठन नहीं; यह गुरु–आज्ञा के प्रति निष्ठा, मर्यादा के प्रति समर्पण और आत्मानुशासन का जीवंत दर्शन है।

आज पूज्यप्रवर आचार्य श्री महाश्रमण जी के दिव्य नेतृत्व तथा नव–युवाचार्यप्रवर श्री महावीर कुमार जी के प्रेरक सान्निध्य में तेरापंथ एक नए स्वर्णिम अध्याय की ओर अग्रसर है। ऐसे शुभ अवसर पर आइए, स्थापना दिवस को केवल उत्सव या जयघोष तक सीमित न रखें।

हम स्वयं से एक दृढ़ संकल्प लें—गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा, मर्यादा के प्रति पूर्ण निष्ठा और विधान के प्रति निष्कंप समर्पण का।

क्योंकि तेरापंथ की वास्तविक पहचान केवल हमारे मुख से निकला उद्घोष नहीं, बल्कि हमारे जीवन में उतरकर जीया गया 'एक गुरु, एक विधान' है।

–कार्यकारी संपादक, तेरापंथ टाइम्स)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।